वर्ष-10, अंक- 06, पृष्ठ- 8, मूल्य : 02 रुपये

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज , मंगलवार 05 मार्च, 2024

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Adhunik Samachar

संक्षिप्त समाचार

अब मुझे मां कौन कहेगा गाजा में स्ट्राइक में महिला ने गंवाए अपने जुड़वा बच्चे

गाजा। इजरायल-हमास की जंग ने कई मासूमों को मौत के घाट उतार दिया। न जाने कितने ही परिवार अपनों से दूर हो गए। ऐसा ही कुछ रानिया अबू अंजा के साथ हुआ है। रविवार को लोग गाजा में इजरायली हवाई हमले से तबाह हुए घरों के नीचे जीवित बचे लोगों की तलाश कर रहे थे। इसी दौरान अबू की नजर अपने नवजात जुड़वां बच्चों पर पड़ी जो अब जिंदा नहीं रहे।गाजा में इजरायली हवाई हमले से तबाह हुए घरों के नीचे जीवित बचे लोगों की तलाश कर रहे थे। इसी दौरान अबू की नजर अपने नवजात जुड़वां बच्चों पर पड़ी जो अब जिंदा नहीं रहे। फलिस्तीनी महिला ने कहा कि वह मां बनने के अपने सपने को

साकार करने के लिए प्रजनन ट्रीटमेंट के कई दौर से गुजरी थी लेकिन गाजा पट्टी में नरसंहार ने उससे उसका सबकुछ छीन लिया।फलिस्तीनी महिला ने कहा कि वह मां बनने के अपने सपने को साकार करने के लिए प्रजनन ट्रीटमेंट के कई दौर से गुजरी थी, लेकिन गाजा पट्टी में नरसंहार ने उससे उसका सबकुछ छीन लिया। रविवार को आंसुओं के साथ अपने बेजान बच्चों को गोद में लिए अबू चिल्लाते और रोते हुए बस यही कह रही थी कि 'अब से मुझे मां कौन कहेगा मुझे मां कौन कहेगा' अबू के एक बच्चे का चेहार पूरा खून से सना हुआ था।हमास द्वारा संचालित गाजा में स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि दक्षिणी गाजा शहर राफा में रात भर हुए हमले में मारे गए 14 लोगों में से यह दोनों जुड़वा बच्चे थे। दोनों का नाम विसम और नईम था जो अभी 6 महीने के भी नहीं हुए थे। इन मौतों के लिए इजरायल को जिम्मेदार ठहराया गया है। मरने वालों में सभी अबू अंजा परिवार के सदस्य थे।

पीएम मोदी का आज से पांच राज्यों का दौरा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। सोमवार से बुधवार (04-06 फरवरी, 2024) के दौरान पीएम नरेन्द्र मोदी तेलंगाना, तमिलनाडु, ओडीसा, पश्चिम बंगाल और बिहार में 56 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा मूल्य की औद्योगिक परियोजनाओं की शुरुआत करेंगे। ये सारी परियोजनाओं बिजली सेक्टर की हैं। इनमें कुछ देश में नई ताप बिजली संयंत्र लगाने की हैं। कुछ परियोजनाओं का काम पूरा हो चुका है, जबकि कुछ परियोजनाओं का प्रधानमंत्री की तरफ से शिलान्यास किया जाएगा।रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सोमवार को मानेकशा सेंटर में डेफकनेक्ट का उद्घाटन करेंगे। स्वदेशी नवाचार को प्रोत्साहन देने और बढ़ती सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए साझेदारी को सुगम बनाने के लिए इनोवेशन फॉर डिफेंस एक्सिलेंस-डिफेंस इनोवेशन आर्गनाइजेशन (आइडीईएक्स-डीआइओ) द्वारा इसका आयोजन किया जा रहा है।पूर्व सांसद आनंद मोहन को दी गई सजा में छूट को चुनौती देने वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट सोमवार को सुनवाई करेगा। गोपालगंज जिले के तत्कालीन जिलाधिकारी जी. कृष्णैया की हत्या मामले में आनंद मोहन उम्र कैद की सजा काट रहे थे।झारखंड मुक्ति मोर्चा का 51वां स्थापना दिवस समारोह सोमवार को गिरिडीह के झंडा मैदान में मनाया जाएगा। झामुमो के लिए इस बार का आयोजन कई मायनों में अलग है।अमेरिका में भी भाजपा का प्रचार शुरू हो गया है। अमेरिका में रह रहे भाजपा समर्थकों ने लोकसभा चुनाव में 400 सीट जीतने के लक्ष्य को हासिल करने में भाजपा की मदद करने का संकल्प लिया है। अमेरिका से भारत में लगभग 25 लाख लोगों का कॉल करने की योजना बनाई जा रही है। कॉल करके भारतीयों से भाजपा को वोट देने का आग्रह किया जाएगा।लोकसभा चुनाव की घोषणा से पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी छह मार्च को फिर बंगाल का दौरा करेंगे। पूर्व सांसद आनंद मोहन को दी गई सजा में छूट को चुनौती देने वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट सोमवार को सुनवाई करेगा। इसके अलावा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सोमवार को मानेकशा सेंटर में डेफकनेक्ट का उद्घाटन करेंगे। अमेरिका में भी भाजपा का प्रचार शुरू हो गया है।

आनंद मोहन की बढ़ सकती हैं मुश्किलें सजा में छूट के खिलाफ याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में होगी आज सुनवाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। पूर्व सांसद आनंद मोहन को दी गई सजा में छूट को चुनौती देने वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट सोमवार को सुनवाई करेगा। गोपालगंज जिले के तत्कालीन जिलाधिकारी जी. कृष्णैया की हत्या मामले में आनंद मोहन उम्र कैद की सजा काट रहे थे।जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस केवी. विश्वनाथन की पीठ दिवंगत अधिकारी की पत्नी उमा कृष्णैया की याचिका पर सुनवाई करेगी। आनंद मोहन को पिछले साल बिहार के सहरसा जेल से रिहा किया गया था। इससे पहले राज्य सरकार ने बिहार जेल नियमावली में संशोधन कर ड्यूटी पर मौजूद लोक सेवक की हत्या में संलिप्तता वालों की समय पूर्व रिहाई पर लगी पाबंदी हटा दी थी।इस मामले में आनंद मोहन को निचली अदालत ने मौत की सजा सुनाई थी, जिसे पटना हाई कोर्ट ने सश्रम आजीवन कारावास में तब्दील कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने इसकी पुष्टि की थी। 1994 में भीड़ ने कृष्णैया को पीट पीटकर मार डाला था। आनंद मोहन पर भीड़ को हत्या के लिए उकसाने का आरोप लगा।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह आज करेंगे डेफकनेक्ट २०२४ का उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सोमवार को मानेकशा सेंटर में डेफकनेक्ट का उद्घाटन करेंगे। स्वदेशी नवाचार को प्रोत्साहन देने और बढ़ती सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए साझेदारी को सुगम बनाने के लिए इनोवेशन फॉर डिफेंस एक्सिलेंस-डिफेंस इनोवेशन आर्गनाइजेशन (आइडीईएक्स-डीआइओ) द्वारा इसका आयोजन किया जा रहा है।राजनाथ सिंह सोमवार को मानेकशा सेंटर में डेफकनेक्ट का उद्घाटन करेंगे। स्वदेशी नवाचार को प्रोत्साहन देने और बढ़ती सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए साझेदारी को सुगम बनाने के लिए इनोवेशन फार डिफेंस एक्सिलेंस-डिफेंस इनोवेशन आर्गनाइजेशन द्वारा इसका आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अत्याधुनिक तकनीकों को प्रदर्शित करना है। यह आयोजन रक्षा क्षेत्र में भारत के अग्रणी उद्योगों से बड़ी संख्या में निवेशकों को आकर्षित करेगा।इस कार्यक्रम का उद्देश्य अत्याधुनिक तकनीकों को प्रदर्शित करना है। यह आयोजन रक्षा क्षेत्र में भारत के अग्रणी उद्योगों से बड़ी संख्या में निवेशकों को आकर्षित करेगा। अब तक आइडीईएक्स ने ने डिफेंस इंडिया स्टार्ट-अप चैलेंज के 10 राउंड और ओपन चैलेंज के 11 राउंड लांच किए हैं, जिसमें तीनों सेनाओं, रक्षा क्षेत्र की सरकारी कंपनियों, भारतीय तटरक्षक बल, सीमा सड़क संगठन और अन्य एजेंसियों के व्यक्तिगत इनोवेटर्स और स्टार्ट-अप से 9,000 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं।डेफकनेक्ट 2024 देश के रक्षा नवाचार परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है, जो सशस्त्र बलों, रक्षा उद्योग के नेताओं, स्टार्ट-अप, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं सहित प्रमुख हितधारकों को एक मंच पर प्रस्तुत करता है। रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (आईडीईएक्स) विजेताओं द्वारा विकसित अत्याधुनिक तकनीकों का प्रदर्शन सभी आगंतुकों के लिए मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहेगा।

एआइएफएफ ने मुख्य कानूनी सलाहकार को किया बर्खास्त, अध्यक्ष पर लगाए थे भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। अखिल भारतीय फुटबाल महासंघ (एआइएफएफ) ने रविवार को अपने मुख्य कानूनी सलाहकार निलांजन भट्टाचार्जी की सेवाएं समाप्त कर दी जिन्होंने अध्यक्ष कल्याण चौबे के विरुद्ध भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए थे। चौबे ने इन आरोपों को आधारहीन करार किया था।अखिल भारतीय फुटबाल महासंघ (एआइएफएफ) ने रविवार को अपने मुख्य कानूनी सलाहकार निलांजन भट्टाचार्जी की सेवाएं समाप्त कर दी जिन्होंने अध्यक्ष कल्याण चौबे के विरुद्ध भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए थे। चौबे ने इन आरोपों को आधारहीन करार किया था। भट्टाचार्जी ने शनिवार को एआइएफएफ से जुड़ी निविदा प्रक्रिया में भ्रष्टाचार का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गृहमंत्री अमित शाह और खेल मंत्री अनुराग ठाकुर को पत्र लिखा था।भट्टाचार्जी ने शनिवार को एआइएफएफ से जुड़ी निविदा प्रक्रिया में 'भ्रष्टाचार' का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और खेल मंत्री अनुराग ठाकुर को पत्र लिखा था। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि चौबे ने महासंघ के कोष का प्रयोग व्यक्तिगत खर्चों के लिए किया।

चौबे ने कहा था कि वह कानूनी रूप से इसका उत्तर देंगे।एआइएफएफ के कार्यवाहक महासचिव एम सत्यनारायण ने रविवार को भट्टाचार्जी को बर्खास्तगी पत्र में लिखा- आपको एआइएफएफ के निर्णय के बारे में सूचित करते हैं कि मुख्य कानूनी सलाहकार के रूप में आपकी नियुक्ति को तत्काल प्रभाव से समाप्त किया जाता है।एआइएफएफ भट्टाचार्जी को अनुबंध के अंतर्गत एक और महीने के लिए भुगतान करेगा क्योंकि बर्खास्तगी के लिए एक महीने की नोटिस की जरूरत होती है। भट्टाचार्जी ने कहा कि उन्हें इसकी आशा थी।

'धौंस जमाने वाले 4.5 अरब डॉलर की नहीं देते मदद पुस्तक विमोचन समारोह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने रविवार को इस सवाल की तीखा जवाब दिया कि क्या भारत क्षेत्र (उपमहाद्वीप व हिंद महासागर क्षेत्र) में धौंस जमा रहा है, विदेश मंत्री ने कहा कि जब पड़ोसी मुश्किल में हों तो बड़ी धौंस जमाने वाले 4.5 अरब डॉलर की मदद नहीं देते।विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने रविवार को इस सवाल की तीखा जवाब दिया कि क्या भारत क्षेत्र (उपमहाद्वीप व हिंद महासागर क्षेत्र) में धौंस जमा रहा है विदेश मंत्री ने कहा कि जब पड़ोसी मुश्किल में हों तो बड़ी धौंस जमाने वाले 4.5 अरब डॉलर की मदद नहीं देते।उन्होंने कहा कि दुनिया के इस हिस्से में आज बड़ा बदलाव वह है जो भारत और उसके पड़ोसियों के बीच हुआ है।एक पुस्तक के विमोचन समारोह में जयशंकर ने कहा- दुनिया के इस हिस्से में आज बड़ा बदलाव वह है, जो भारत और उसके पड़ोसियों के बीच हुआ है। जब आप कहते हैं कि भारत को एक बड़ा धौंस जमाने वाला माना जाता है, तो आप यह भी जानते हैं कि जब पड़ोसी मुसीबत में होते हैं तो बड़े धौंस जमाने वाले साढ़े चार अरब डॉलर नहीं देते।

घूसखोरी मामले में एनएचआई महाप्रबंधक समेत छह गिरफ्तार, सीबीआइ ने आरोपियों के ठिकाने से बरामद किए 1.10 करोड़

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। सीबीआई ने घूसखोरी के दो वरिष्ठ अधिकारियों सहित छह लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें के महाप्रबंधक अरविंद काले और उपमहाप्रबंधक ब्रजेश कुमार साहू शामिल हैं। आरोपितों के ठिकाने से 1.10 करोड़ रुपये बरामद किए गए हैं।सीबीआई ने घूसखोरी में के दो वरिष्ठ अधिकारियों सहित छह लोगों को गिरफ्तार किया है। एजेंसी को जानकारी मिली थी कि कंपनी के कर्मचारी महाराष्ट्र के नागपुर और मध्य प्रदेश में अधिकारियों को रिश्वत पहुंचाते हैं। अधिकारियों के मुताबिक आरोप था कि आउटर रिंग रोड परियोजना के लिए कृष्णा रिश्वत के बदले लंबित मामलों को निपटाने के लिए काले के नियमित संपर्क में था।यह मामला महाराष्ट्र के नागपुर में आउटर रिंग रोड प्रोजेक्ट में 20 लाख रुपये की रिश्वत दिए जाने से जुड़ा है। नागपुर के परियोजना निदेशक काले और मध्य प्रदेश के हरदा में परियोजना निदेशक साहू

को सीबीआई ने भोपाल स्थित बंसल कंस्ट्रक्शन वर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के निदेशकों अनिल बंसल और कुणाल बंसल और कंपनी के कर्मचारियों छतर सिंह लोधी और सी. कृष्णा के साथ गिरफ्तार किया।हाल में दर्ज एफआईआर में सीबीआई ने चैंघ् के चार अधिकारियों, कंपनी व उसके निदेशकों और कर्मचारियों सहित 11 लोगों पर केस दर्ज किया था। प्रवक्ता ने कहा, "आरोप लगाया गया था कि भोपाल स्थित एक निजी कंपनी के निदेशक अपने कर्मचारियों के माध्यम से के विभिन्न अधिकारियों को विभिन्न सड़कों का पूर्णता प्रमाणपत्र जारी करने, बिलों की मंजूरी आदि के बदले में रिश्वत दे रहे थे।

पवन सिंह के चुनाव न लड़ने पर शत्रुघ्न सिन्हा का आया पहला रिएक्शन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

कोलकाता। भारतीय जनता पार्टी ने शनिवार (2 फरवरी) को भोजपुरी

सुपरस्टार और भाजपा नेता पवन सिंह को आसनसोल सीट से अपना उम्मीदवार बनाया था। लेकिन, 24 घंटे के अंदर ही पवन सिंह ने आसनसोल सीट से चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया। बता दें कि इस सीट से फिलहाल टीएमसी नेता शत्रुघ्न सिन्हा सांसद हैं।पवन सिंह के चुनाव न लड़ने के फैसले पर शत्रुघ्न सिन्हा ने प्रतिक्रिया साझा की है। उन्होंने कहा कि पवन सिंह अच्छा आदमी है। अपना बच्चा है परिवार का है। लेकिन उसने चुनाव लड़ने का तय किया है ।

पांच राज्य व 56,000 करोड़ की परियोजनाए पीएम मोदी इन औद्योगिक परियोजनाओं का करेंगे शिलान्यास

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। सोमवार से बुधवार (04-06 फरवरी, 2024) के दौरान पीएम नरेन्द्र मोदी तेलंगाना, तमिलनाडु, ओडीसा, पश्चिम बंगाल और बिहार में 56 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा मूल्य की औद्योगिक परियोजनाओं की शुरुआत करेंगे। ये सारी परियोजनाओं बिजली सेक्टर की हैं। इनमें कुछ देश में नई ताप बिजली संयंत्र लगाने की हैं। कुछ

परियोजनाओं की शुरुआत करेंगे। ये सारी परियोजनाओं बिजली सेक्टर की हैं। इनमें कुछ देश में नई ताप बिजली संयंत्र लगाने की हैं। कुछ परियोजनाओं का काम पूरा हो चुका है, जबकि कुछ परियोजनाओं का प्रधानमंत्री की तरफ से शिलान्यास किया जाएगा।सोमवार से बुधवार (04-06 फरवरी 2024) के दौरान पीएम नरेन्द्र मोदी तेलंगाना तमिलनाडु ओडीसा पश्चिम बंगाल और बिहार में 56 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा मूल्य की औद्योगिक परियोजनाओं की शुरुआत करेंगे। ये सारी परियोजनाओं बिजली सेक्टर की हैं। इनमें कुछ देश में नई ताप बिजली संयंत्र लगाने की हैं। कुछ परियोजनाओं का काम पूरा हो चुका है जबकि कुछ परियोजनाओं का प्रधानमंत्री की तरफ से शिलान्यास किया जाएगा।इस दौरान पीएम मोदी ओडीसा में 19,600 करोड़ रुपये, पश्चिम बंगाल में 15,400 करोड़ रुपये और बिहार के लिए 12,800 करोड़ रुपये की परियोजनाएं हैं। इनमें सरकारी कंपनी एनटीपीसी की 30,023 करोड़ रुपये बिजली परियोजनाएं भी शामिल हैं।

प्रियंका गांधी रायबरेली से नहीं इस सीट से लड़ सकती हैं चुनाव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

दमन और दीव। लोकसभा चुनाव को लेकर सभी पार्टियां एक्शन मोड में आ गई हैं। भाजपा ने तो अपने उम्मीदवारों की पहली सूची भी जारी कर दी है। भाजपा ने पहली लिस्ट में 195 उम्मीदवारों के नाम जारी किए हैं। इस बीच कांग्रेस भी जल्द

पहली सूची जारी कर सकती है। वहीं, कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी के चुनाव लड़ने पर भी बड़ा अपडेट आया है।सभी पार्टियां लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जुट गईं है। भाजपा ने अपने उम्मीदवारों की पहली सूची भी जारी कर दी है जिसमें 195 उम्मीदवारों के नाम बताए गए हैं। इस बीच कांग्रेस भी जल्द पहली सूची जारी कर सकती है। वहीं कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी के चुनाव लड़ने पर भी बड़ा अपडेट सामने आया है।

लखनऊ के बाद आज अयोध्या जाएंगे एमपी के मुख्यमंत्री मोहन यादव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

भोपाल। मध्य प्रदेश की पूरी कैबिनेट आज अयोध्या धाम में राम मंदिर का दौरा करेगी। बता दें कि मुख्यमंत्री मोहन यादव ने लखनऊ के दौरे के बाद भोपाल लौटे हैं। इस बीच उन्होंने एलान किया की आज यानी सोमवार को मध्य प्रदेश कैबिनेट के सदस्य अयोध्या धाम का दौरा करेंगे।मध्य प्रदेश की पूरी कैबिनेट आज अयोध्या धाम में राम मंदिर का दौरा करेगी। सीएम मोहन यादव ने कहा कि लखनऊ के दौरे के बाद मैं भोपाल लौटा।पूरे उत्साह के साथ मैं कहना चाहूंगा कि कल मध्य प्रदेश कैबिनेट के सदस्य अयोध्या धाम का दौरा करेंगे।फरवरी में जबरदस्त भीड़ के कारण हमने मार्च में यात्रा करने का फैसला किया।राम लल्ला की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को आयोजित की गई थी।सीएम मोहन यादव ने कहा 'लखनऊ के दौरे के बाद मैं भोपाल लौटा। पूरे उत्साह के साथ मैं कहना चाहूंगा कि कल मध्य प्रदेश कैबिनेट के सदस्य अयोध्या धाम का दौरा करेंगे। फरवरी में जबरदस्त भीड़ के कारण हमने मार्च में यात्रा करने का फैसला किया।'सीएम ने आगे कहा कि 22 जनवरी को भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा सभी के लिए बड़े गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि भगवान राम में हमारी गहरी आस्था है और हम सनातन धर्म में विश्वास करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी को अयोध्या में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा की।

भाजपा की अगली सूचियों में दिख सकते हैं कई बदले चेहरे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव में 370 पार सीटों का लक्ष्य लेकर चल रही भाजपा ने चुनावी बिसात पर अपने मोहरे सजाना शुरू कर दिया है। 195 उम्मीदवारों की पहली सूची में मौजूदा सांसदों की दावेदारी पर भाजपा ने भले ही

बहुत कम कैंची चलाई हो, लेकिन दूसरी और तीसरी सूची में तुलनात्मक रूप से कई बदले चेहरे दिखाई दे सकते हैं। जिन सीटों को अभी प्रतीक्षा में रखा गया है, उनमें उन सांसदों के नाम भी हैं, जिन पर तलवार लटके होने की चर्चा थी। साथ ही कई सीटों पर असमंजस के अलावा विपक्षी दलों के दांव पर भी पार्टी की नजर है।भाजपा ने 16 राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 195 प्रत्याशियों की सूची शनिवार को घोषित कर दी। इनमें पश्चिम बंगाल की आसनसोल सीट से प्रत्याशी पवन कुमार के चुनाव न लड़ने की घोषणा के बाद 349सीटों पर उम्मीदवार उतारे जाने बाकी हैं।समेत कई राज्यों में सहयोगी दलों के लिए सीटें छोड़े जाने के बाद बाकी सीटों के लिए प्रत्याशी चयन की प्रक्रिया चल रही है।भाजपा ने 16 राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 195 प्रत्याशियों की सूची शनिवार को घोषित कर दी।

आरओ-एआरओ पेपर लीक प्रकरण में एफआईआर दर्ज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज। आरओ-एआरओ परीक्षा के पेपर लीक मामले में आयोग की ओर से सिविल लाइंस थाने में मुकदमा दर्ज कराया गया है। आयोग के मुताबिक परीक्षा शुरू होने से पहले ही कई प्रश्न लीक हो गए थे। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) की समीक्षा अधिकारी-सहायक समीक्षा अधिकारी (आरओ-एआरओ) परीक्षा में पेपर लीक के प्रकरण में सिविल लाइंस थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई है। आयोग के सचिव अशोक कुमार की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया गया है। प्रथम प्रश्न पत्र सामान्य अध्ययन के 103 और द्वितीय प्रश्न पत्र सामान्य हिंदी के 25 प्रश्नों के परीक्षा शुरू होने से पहले ही लीक होने के प्रणाम मिले हैं। अभ्यर्थियों के प्रत्यावेदन में इसके प्रमाण भी मिले हैं। प्रारंभिक जांच के बाद आयोग की ओर से रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। शासन की ओर से समीक्षा अधिकारी (आरओ)/सहायक समीक्षा अधिकारी (एआरओ) प्रारंभिक परीक्षा-2023 को निरस्त किए जाने के बाद उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) के इतिहास की

सबसे बड़ी परीक्षा पर पेपर लीक का दाग लग गया है। आरओ/एआरओ के 411 पदों के लिए 1076004 अभ्यर्थियों ने आवेदन किए थे। परीक्षा के लिए प्रदेश के 58 जिलों में 2387 केंद्र बनाए गए थे। 11 फरवरी को हुई परीक्षा में 64 फीसदी अभ्यर्थी शामिल हुए थे। आयोग की किसी भी परीक्षा के लिए पहली बार इतनी अधिक संख्या में अभ्यर्थियों ने आवेदन किए थे और पहली बार किसी परीक्षा के लिए सबसे ज्यादा केंद्र भी बनाए गए थे। हालांकि, आयोग ने परीक्षा में गड़बड़ी रोकने के लिए इस बार कई नए कदम उठाए थे पहली बार परीक्षा केंद्रों में 50 फीसदी से अधिक बाहरी कक्ष निरीक्षक तैनात किए गए थे। आयोग ने तो शासन को यह प्रस्ताव भी भेजा था कि राजस्थान की तर्ज पर यहां भी परीक्षा के दौरान इंटरनेट सेवा बंद कर दी जाएं, लेकिन इससे आम लोगों को होने वाली दिक्कत के मद्देनजर शासन ने इसकी अनुमति नहीं दी।

तेज हवाओं संग बारिश, ओले से फसलें चौपट, कीचड़ से सनीं सड़कें

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज। घूरपुर के चंपतपुर में शादी का पंडाल गिर गया। गनीमत रही कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ। वहीं, नवाबगंज में तीन दर्जन भट्ठों पर कच्ची ईंटें गल गईं। शहरी इलाकों में सड़कें कीचड़ से सन गईं। मौसम केंद्र के अनुसार शाम तक 0.5 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई। मऊआइमा ब्लॉक में सोमवार को सुबह भी ओले गिरे। तेज हवाओं संग बारिश ने रविवार को शहर से गांव तक मुश्किलें बढ़ा दीं। भीरपुर, सैदाबाद, बारा, नवाबगंज, मऊआइमा, मेजा में चना, मसूर, मटर की फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, जबकि कौंधियारा में ओले गिरने से फसलें चौपट हो गई हैं। घूरपुर के चंपतपुर में शादी का पंडाल गिर गया। गनीमत रही कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ। वहीं, नवाबगंज में तीन दर्जन भट्ठों पर कच्ची ईंटें गल गईं। शहरी इलाकों में सड़कें कीचड़ से सन गईं। मौसम केंद्र के अनुसार शाम तक 0.5 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई।

मऊआइमा ब्लॉक में सोमवार को सुबह भी ओलों की बारिश हुई। इससे फसलों को काफी नुकसान हो रहा है। पिछले दो दिनों से जिले में बारिश का मौसम बना हुआ है। शनिवार देर शाम शुरू हुई बारिश भोर तक होती रही। रविवार सुबह आठ बजे मौसम कुछ तक साफ रहा, लेकिन तेज हवाएं चलती रहीं।

पांच साल में तीसरे परीक्षा नियंत्रक पर गिरी गाज, एक पर सीबीआई तो दूसरे पर एसटीएफ ने दर्ज कराया था मुकदमा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज। पांच साल में तीसरे परीक्षा नियंत्रक पर गाज गिरी है। एक परीक्षा नियंत्रक पर सीबीआई और दूसरे पर एसटीएप ने मुकदमा दर्ज कराया था। आरओ/एआरओ

के साथ एपीएस और एलटी ग्रेड भर्ती पर दाग भी लग चुके हैं। भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ी के कारण पांच वर्षों के दौरान उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) के तीसरे परीक्षा नियंत्रक पर गाज गिरी है। इससे पूर्व एपीएस भर्ती परीक्षा-2010 में हुई धांधली पर सीबीआई ने पूर्व परीक्षा नियंत्रक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था और एलटी ग्रेड शिक्षक भर्ती-2018 में पेपर लीक मामले में तत्कालीन परीक्षा नियंत्रक को एसटीएफ ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ी के कारण पांच वर्षों के दौरान उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) के तीसरे परीक्षा नियंत्रक पर गाज गिरी है। इससे पूर्व एपीएस भर्ती परीक्षा-2010 में हुई धांधली पर सीबीआई ने पूर्व परीक्षा नियंत्रक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था और एलटी ग्रेड शिक्षक भर्ती-2018 में पेपर लीक मामले में तत्कालीन परीक्षा नियंत्रक को एसटीएफ ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) की कोई भी परीक्षा हो, यह बात केवल परीक्षा नियंत्रक को मालूम होती है कि प्रश्नपत्र देश की किस प्रिंटिंग प्रेस में छप रहा है। आयोग के अध्यक्ष को भी यह जानकारी नहीं होती है कि पेपर छपने के लिए किस प्रिंटिंग प्रेस में भेजा गया है। प्रश्नपत्रों के कई सेट तैयार किए जाते हैं और अलग-अलग बंद लिफाफों में परीक्षा नियंत्रक के पास भेज दिए जाते हैं।

हाईकोर्ट ने पानी टंकी ओवर ब्रिज तोड़ने के मामले में जानकारी तलब

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज। यह आदेश मुख्य न्यायमूर्ति अरूण भंसाली और न्यायमूर्ति विकास बुधवार की खंडपीठ ने कमलेश कुमार सिंह व अन्य की ओर से दाखिल जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया हैइलाहाबाद हाईकोर्ट ने पानी टंकी ओवर ब्रिज तोड़ने के मामले में जानकारी तलब की है। कोर्ट ने कहा है कि इस संबंध में सुनवाई की अगली तारीख पर पूरी रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए। कोर्ट इस मामले की सुनवाई चार अप्रैल को करेगयह आदेश मुख्य न्यायमूर्ति अरूण भंसाली और न्यायमूर्ति विकास बुधवार की खंडपीठ ने कमलेश कुमार सिंह व अन्य की ओर से दाखिल जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया है। इसके पहले सुनवाई शुरू होते ही याची अधिवक्ता विजय चंद्र श्रीवास्तव एवं सुनीता शर्मा ने कहा कि प्रशासन ने ओवर रेलिंग टूटने पर ही ओवर ब्रिज को तोड़ने का निर्णय ले लिया।

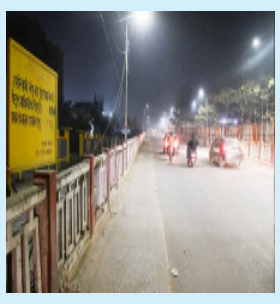

आवासीय छात्रावास में प्रवेश के लिए कल से शुरू होंगे ट्रायल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज। केंद्रीय शिविर में शामिल होने के लिए जिम्नास्टिक व तैराकी के खिलाड़ियों की उम्र अधिकतम 12 वर्ष और अन्य खेलों की उम्र 15 वर्ष निर्धारित की गई है। प्रयागराज में मंगलवार को बालक वर्ग का जिम्नास्टिक, तैराकी, कुश्ती, हॉकी, वॉलीबॉल, फुटबॉल, बैडमिंटन और टेबल टेनिस का जिला स्तरीय ट्रायल होगा जबकि, मंडल स्तरीय ट्रायल आठ मार्च को होगा। खेल निदेशालय उत्तर प्रदेश के अधीन विभिन्न जनपदों में स्थापित विभिन्न खेलों के आवासीय छात्रावासों में सत्र 2024-25 में प्रवेश के लिए दो से 16 अप्रैल तक लगने वाले 15 दिवसीय केंद्रीय प्रशिक्षण शिविर के लिए मंगलवार से ट्रायल शुरू होंगे। खिलाड़ियों को जिला, मंडल और राज्य स्तर के ट्रायल में प्रतिभाग करना होगा। राज्य स्तर पर चयनित खिलाड़ी 15 दिवसीय

केंद्रीय प्रशिक्षण शिविर में शामिल होंगे। इस शिविर से ही खिलाड़ियों का चयन आवासीय छात्रावास के लिए किया जाएगा। निदेशालय की ओर से 16 खेलों में 705 खिलाड़ियों को शिविर के लिए चुना जाएगा। केंद्रीय शिविर में शामिल होने के लिए जिम्नास्टिक व तैराकी के खिलाड़ियों की उम्र अधिकतम 12 वर्ष और अन्य खेलों की उम्र 15 वर्ष निर्धारित की गई है। प्रयागराज में मंगलवार को बालक वर्ग का जिम्नास्टिक, तैराकी, कुश्ती, हॉकी, वॉलीबॉल, फुटबॉल, बैडमिंटन और टेबल टेनिस का जिला स्तरीय ट्रायल होगा जबकि, मंडल स्तरीय ट्रायल आठ मार्च को होगा।

हिंदवी स्वराज नाटक में दिखी मुगलों के साथ शिवाजी के संघर्ष की गाथा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

वाराणसी। वाराणसी के रुद्राक्ष प्रेक्षागृह में आयोजित हिंदवी स्वराज

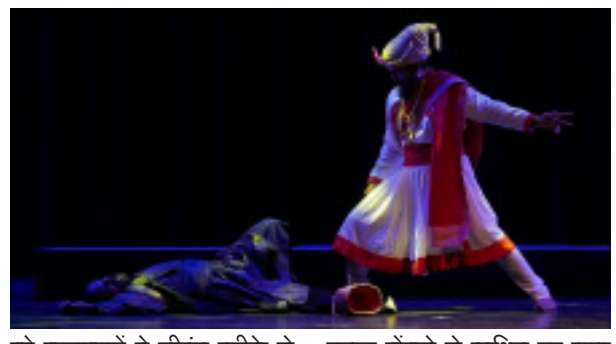

को कलाकारों ने जीवंत तरीके से प्रस्तुत किया। युद्धभूमि में जब तानाजी बलिदान हो गए तो शिवाजी के मुंह से निकला- गढ़ तो आया पर सिंह गया। शिवाजी का आगरा से वापस आना किसी चमत्कार से कम नहीं था। काशी विश्वनाथ मंदिर उखाड़ फेंकने से व्यथित हुए गागा भट्ट महाराष्ट्र आकर शिवाजी से मिले और बताया कि मंदिरों की मूर्तियों से मस्जिदों की सीढ़ियां बन रही हैं। आप राजा बनकर समाज को प्रेरणा दें। छत्रपति शिवाजी का एक ही प्रयास था कि समाज का खोया आत्मविश्वास पुनः जागृत हो। शुद्ध मन से किया गया प्रयत्न सफल होता है, यही कारण है कि शिवाजी को पराक्रमी साथी भी मिले। सिगरा स्थित रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर के मंच पर हिंदवी स्वराज को कलाकारों ने जीवंत किया। छत्रपति शिवाजी का जीवन संघर्ष और उनकी परिकल्पनाओं से दर्शक रूबरू हुए। शक्तिशाली मुगल शासन के आगे उपमहाद्वीप के एक से एक राज्य घुटने टेक रहे थे। वहीं, महाराष्ट्र में शिवाजी का उदय भारतीय जनमानस के लिए बड़े संबल के रूप में सामने आया।

आधुनिक
गेस्ट हाउस

- वाटर प्रूफ शेड
- पार्किंग की सुविधा
- मन्दिर की सुविधा
- सी.सी.टीवी.
- छोटे-बड़े कार्यक्रमों के अलग-अलग रेट
- 45000 sq. feet. एरिया
- हरे-भरे वातावरण
- AC कमरा (VIP)

CALL: 9519313894,9415608783, 9415608710

आधुनिक समाचार पब्लिशिंग हाउस, यूपीएसआईडीसी, रेमण्ड रोड, औधोगिक थाने के पीछे भारत पेट्रोलियम के पहले, औधोगिक क्षेत्र, नैनी, प्रयागराज

संगम लाल गुप्ता को प्रत्याशी बनाये जाने पर जिले के नेताओं ने जताई खुशी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रतापगढ़। भाजपा द्वारा सांसद संगम लाल गुप्ता को पुनः लोकसभा प्रत्याशी बनाये जाने पर एक संयुक्त प्रेस वार्ता में विधायक राजेन्द्र मौर्या एवं जिलाध्यक्ष भाजपा आशीष श्रीवास्तव ने सांसद संगम लाल के साथ एक होटल में सम्बोधित करते हुये केन्द्रीय नेतृत्व को धन्यवाद दिया और कहा कि प्रथम चरण में अधिसूचना के पहले प्रतापगढ़ का टिकट घोषित करने से हम सभी कार्यकर्ताओं को चुनाव की रणनीतिक सफलता हेतु पर्याप्त समय मिल गया ।जिला अध्यक्ष ने कहा कि आने वाले समय में जनपद का कार्यकर्ता सांसद के कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार है। अभी हमारा धोषणा पत्र नहीं बना है पर मोदी जी की इच्छा है कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिये जन सहभागिता जरूरी है जिसके लिये कल से हमारे जनपद में विकसित भारत मोदी की गारंटी अभियान के तहत संकल्प पत्र संकलन एवं वीडियो वैन का संचालन होगा।इस अभियान के माध्यम से भाजपा द्वारा 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने हेतु नागरिको से सुझाव एकत्रित किये जायेगें।यह अभियान 30प्र0 में 3 मार्च से 15 मार्च तक चलेगा। इसमें हर विधान सभा में 1 पेटी और जिला मुख्यालय पर 1 पेटी रखी जायेगी जिसमें 500 सुझाव पत्रक रखे जायेगें और प्रतिदिन इसका संकलन कर प्रदेश के माध्यम से केन्द्र भेजा जायेगा और नमो ऐप पर अपलोड किया जायेगा।सांसद ने कहा कि सरकार की सर्वांगीण विकास की सोच का परिणाम है कि आज आजादी के 70 साल बाद प्रतापगढ़ जैसी जगह पर भी मेडिकल कॉलेज की स्थापना कराने में हम सफल हो सके। नगर के भुपियामऊ से गोंडे के बीच 11.3 किमी को सीसी रोड़ डिवाइडर सहित निर्माण कार्य की प्रकिया आरम्भ है जल्द ही नगर के मध्य की सड़क की तस्वीर बदलती दिखेगी,वहीं गोंडे से सुखपालनगर का बाई पास का तेजी के साथ निर्माण हो रहा है जिससे शहर का जाम समाप्त हो जाएगा और उसके साथ ही अधूरे बाई पास को बढ़ाकर आगे राजगढ़ तक मिलाने की भी स्वीकृति के साथ स्थल पर कार्य भी आरम्भ हो चुका है जो बहुत बड़े बदलाव का आधार बनेगा ।उन्होंने बताया की इसी तरह लालगंज,सगरा सुन्दरपुर, रानीगंज अजगरा, मोहनगंज, पृथ्वीगंज,रानीगंज तहसील से होकर गुजरने वाले लखनऊ वाराणसी राजमार्ग पर जाम से मुक्ति दिलाने हेतु 51 किमी लम्बे बाई पास निर्माण की प्रक्रिया भी आरम्भ हो चुकी है जिसका भूमिपूजन भी बीते दिनों केंद्रीय मंत्री ने स्वयं कर दिया है।इसी प्रकार प्रतापगढ़ से अमेठी, गौरीगंज, मुसाफिरखाना को राष्ट्रीय राजमार्ग के रूप में विकसित करने की परियोजना पर भी कार्य आरम्भ किया जा चुका है,जिसमे नरहरपुर से अंतू तक 16 किमी का ग्रीन कॉरिडोर के रूप में बाई पास निर्माण की घोंषणा भी हो गई।साथ ही राष्ट्रीय राजमार्ग प्रयागराज के मकूनपुर चौराहे से बेलखरनाथ धाम,माँ बाराही देवी धाम होते हुए शनिदेव धाम से पुनःएनएच 330 पर विश्वनाथगंज बाजार में 40 किमी के लंबे रिंग रोड़ जे निर्माण की भी घोषणा कर दी गई है।मेडिकल कालेज के लिये भी सर्विसलेन तथा गोंड़े से संग्रामपुर के 2 किमी सर्विसलेन बनाने की भी घोंषणा मंत्री द्वारा की जा चुकी है ।उन्होंने कहा कि चिलबिला जैसी जर्जर और गंदगी के अंबार की स्थिति वाले स्टेशन को आज हाईटेक कर महानगरों के स्टेशनो की भांति विकसित किया जा चुका है।साथ ही मां बेल्हा देवी धाम जंक्शन स्टेशन को एयरपोर्ट की तर्ज पर विकसित करने की आधारशिला स्वयं पीयम मोदीजी द्वारा करने के साथ कार्य भी आरम्भ हो चुका है।इसी कार्यकाल में चार नये थानों का निर्माण कर 140 पुलिस बूथों और 35 पुलिस चैकियों का नव निर्माण सहित पुराने जर्जर थानों के भवन का कायाकल्प कर फरियादियों से जुड़ी जनसुविधाएँ उपलब्ध कराकर जनता में प्रशासन के प्रति विश्वास कायम करने की ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की है । उन्होंने कहा कि कई दशकों से लम्बित मकूनपुर रेलवेअंडर पास आज पूर्ण होने की स्थिति में है वहीं जेशरगंज पठकौली, राईपुर,नरहरपुर में रेलवे अंडर पास की मंजूरी एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।उन्होंने कहा कि आज प्रत्येक विधान सभा मे ऐतिहासिक रूप के पीएमजीएसआई की सड़कों का जाल बिछता दिख रहा है जो मोदी 2 की उपलब्धि है ।

अखिलेश यादव का तंज, बोले- अब तो भाजपा वाले खुद कह रहे हैं नहीं चाहिए भाजपा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

लखनउ।सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कई भाजपा नेताओं द्वारा चुनाव न लड़ने का एलान करने पर कहा कि भाजपा एक राजनीतिक दल के रूप में इतनी कमजोर पहले कभी भी नहीं थी। राजनीतिक दल के रूप में इतनी कमजोर कभी भी नहीं थी।उन्होंने सोशल मीडिया साइट एक्स पर कहा कि किसने सोचा था कि भाजपा के ऐसे दिन भी आएंगे कि कुछ उम्मीदवार टिकट मिलने से पहले कुछ और काम को ज्यादा

यहां तक कि भाजपाई खुद भी भाजपा सरकार नहीं चाहते।सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भाजपा पर तंज कसते हुए कहा कि अब तो भाजपा के लोग ही कह रहे हैं कि नहीं चाहिए भाजपा। उन्होंने कहा कि भाजपा एक जरूरी बताने का बहाना करके दावेदारी छोड़ देंगे। कोई खेल को राजनीति से अधिक गंभीर मानकर बाहर जाने की बात करेगा तो कोई पर्यावरण के बहाने पतझड़ी भाजपा से बाहर निकलने के लिए प्रार्थना पत्र लिखेगा।

पहाड़पुर में होगा होली मिलन कवि सम्मेलन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रतापगढ़। होली के पावन सन्दर्भ में प्रेम,सद्भाव,समरसता,एकता एवं मतदाता जागरूकता को दृष्टिगत भारत-भारतीय पहाड़पुर में होली मिलन कवि सम्मेलन का आयोजन 29 मार्च को करेगा।यह होली मिलन कवि सम्मेलन अशोक कुमार दुबे एवं विनोद कुमार वर्मा के संयोजन

में दिन में आयोजित होगा।अशोक कुमार दुबे ने बताया कि सुप्रसिद्ध कवि एवं कहानीकार डॉ.रणजीत सिंह के कवि समूह के कवि एवं कवयित्री प्रेम,सद्भाव,समरसता, सौहार्द,एकता और मतदाता जागरूकता पर आधारित कविताओं का वाचन करके श्रोताओं को संदेश देने के साथ ही आनंदित करेंगे।इस परिपेक्ष्य में एक बैठक सामाजिक माध्यम से आहूत की गई जिसमें देवदत्त शुक्ल प्रधान,तकनीकी सहायक अजीत सिंह,पूर्व प्रधान श्यामलाल वर्मा,अनिरुद्ध प्रसाद वर्मा,दिनेश प्रताप सिंह,दीपक दुबे,अशोक कुमार दुबे,विनोद कुमार वर्मा,गिरिजेश विश्वकर्मा आदि ने भाग लिया। अध्यक्षता नवीन दुबे ने किया।कार्यक्रम के प्रेरणा स्रोत डॉ.रणजीत सिंह ने प्रस्ताव रखा कि कार्यक्रम में स्मृतिशेष दिनेश चन्द्र दुबे समाजसेवी के नाम पर एक रचनाकार को सम्मानित किया जाएगा जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।जैसा कि ठभारत-भारतीयठ कई वर्षों से सगरा सुन्दरपुर के कवि सम्मेलन में समाजसेवी दिनेश चन्द्र दुबे सम्मान हर वर्ष एक कवि को सम्मान स्वरूप प्रदान करती रही है जिसमें कवि को रूपये 5100/नकद,सम्मान पत्र एवं दुशाला भेंट किया जाता है।

२२ लेखपाल नियुक्त, फिर भी वरुणा-असि के डूब क्षेत्र का सीमांकन नहीं

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

वाराणसी। देखा जाए तो हर नदी का अपना डूब क्षेत्र होता है। जब असि नदी के किनारे 50-50 मीटर क्षेत्र को ग्रीन बेल्ट घोषित किया था, लेकिन सीमांकन न

कभी बाढ़ आएगी तो पानी डूब क्षेत्र में भरता है। यह इलाका खाली रखा जाता है ताकि किसी प्रकार की जनहानि न होने पाए। वरुणा और असि के डूब क्षेत्र में सैकड़ों अवैध निर्माण हैंवाराणसी में गंगा की सहायक नदियां वरुणा और असि के डूब क्षेत्र का सर्वे तो किया गया, लेकिन सीमाकंन आज तक नहीं हुआ है। वीडीए ने वरुणा और नगर निगम ने होने से नदियों के अस्तित्व पर खतरा है।पूर्व में जब वरुणा कॉरिडोर बनाया गया तो डूब क्षेत्र में आने वाले 762 लोगों को वीडीए की ओर से ध्वस्त करने का नोटिस दिया गया था। कुछ जगहों पर कार्रवाई भी की गई, लेकिन मामला ठंडे बस्ते में चला गया। हाल ही में असि को लेकर नगर निगम ने अभियान चलाया। कई अवैध निर्माणों को चिह्नित किया गया।

गोरखपुर में पैडलेगंज चौराहे के पास निर्माणाधीन नाले की दीवाल ढ़ही

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

गोरखपुर। गोरखपुर स्थित पैडलेगंज में निर्माणाधीन नाले की दीवाल गिरने से दस मजदूर घायल हो गए हैं। इनमें एक गंभीर रुप से घायल बताया जा रहा। सभी को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।पैडलेगंज-फिराक चौक तक फोरलेन निर्माण के लिए बन रहे नाले का ढांचा ढहने से 10 मजदूर घायल हो गए।

वाराणसी के एक मजदूर को गंभीर चोट आई है, जिसे छात्रसंघ चौराहा के पास प्राइवेट अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया गया है। बाकी नौ को मामूली चोट आई थी, उपचार के बाद उन्हें अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया गंभीर रूप से घायल मजदूर राकेश कुमार (27) वाराणसी के सारनाथ थाना क्षेत्र के सराय मुहाना का रहने वाला है। जानकारी के मुताबिक, पैडलेगंज से फिराक चौक तक फोरलेन का निर्माण हो रहा है। इसके लिए रविवार को पैडलेगंज के आगे एक कार शोरूम के सामने ही नाले का निर्माण किया जा रहा था। इसके लिए लोहे के सरिया का जाल बांधा जा रहा था। बरसात की वजह से मिट्टी गिली हो गई थी जिससे सरिया लगाते ही मिट्टी दरक गई।उस दौरान काम कर रहे 10 मजदूर नीचे दब गए।

आयकर टीम ने 150 करोड़ से ज्यादा की कर चोरी पकड़ा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

कानपुर। तंबाकू कारोबारी के दिल्ली, गुजरात और शहर स्थित प्रतिष्ठानों में चौथे दिन भी आयकर की जांच जारी रही। टीम ने 150 करोड़ से ज्यादा की कर चोरी पकड़ी। कानपुर से अपना कारोबार दिल्ली और गुजरात शिफ्ट कर चुके तंबाकू कारोबारी केके मिश्रा उर्फ मुन्ना मिश्रा के प्रतिष्ठानों पर लगातार चौथे दिन रविवार को भी आयकर जांच जारी रही। आयकर टीम ने अब तक 150 करोड़ से ज्यादा की कर चोरी पकड़ी है। अभी जांच चल रही है। इससे रकम और बढ़ने की आसार हैं। कारोबारी के प्रतिष्ठानों से अलग-अलग जगहों पर खरीदी गई 18 संपत्तियों के दस्तावेज मिले हैं।गुजरात के ऊंझा में फैक्टरी के अलावा कई एकड़ में फैला फार्म हाउस और बंगला भी मिला है।` हैं।

तहसील अध्यक्ष ने पत्रकारों के हित की रक्षा का दिया आश्वासन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

बारा प्रयागराज। रविवार को पत्रकार एसोसिएशन प्रयागराज के तहसील इकाई को कुछ आवश्यक सुझाव दिए। मनोज केसरवानी ने नव नियुक्त तहसील अध्यक्ष को

तहसील इकाई बारा की एक आवश्यक बैठक शंकरगढ़ विकासखंड सभागार में संपन्न हुई जिसमे संगठन विस्तार, पत्रकार उत्पीड़न सहित तमाम बिंदुओ पर चर्चा करते हुए उपस्थित पत्रकारों को सम्मान पत्र से सम्मनित किया गया।बैठक में बोलते हुए पत्रकार कृष्ण चंद्र शुक्ला ने कहा कि हम सभी को आपस मे मिल जुल कर रहना चाहिए। जिससे हमारा उत्पीड़न न हो। पत्रकार माजिद ने बधाई देते हुए कहा कि संगठन में पत्रकारिता से जुड़े लोगों को ही जोड़ा जाए। संगठन के महासचिव इंद्रजीत मिश्रा ने सदस्यता फार्म, परिचय पत्र, पत्रकारों को अपनी गरिमा बनाए रखने संबंधी कई बिंदुओं पर प्रकाश डाला। संगठन के तहसील संरक्षक ने सभी पत्रकार साथियों का मार्गदर्शन करते हुए बैठक के आयोजकों की प्रशंसा की। अंत में बारा तहसील इकाई के तहसील अध्यक्ष रावेंद्र तिवारी ने कहा कि आप लोग तथ्यों पर आधारित खबरें ही लिखें। अगर आप गलत नही हैं तो संगठन मजबूती के साथ आपके साथ खड़ा है। अगर किसी अधिकारी या विभाग द्वारा आपका उत्पीड़न होता है तो मैं समाधान होने तक मैं संबंधित विभाग या अधिकारी कार्यालय में धरने पर बैठने का काम करूंगा। उन्होंने आपस में एक दूसरे की बुराई न करने, मिलजुल कर रहने, और संगठन के हितों के बारे में प्रयास करते रहने की सलाह दी। बैठक में पत्रकारों को सम्मान पत्र देकर सम्मानित भी किया गया। बैठक में मुख्य रूप से नईम अहमद,राकेश कुशवाहा, शनि कुमार यादव,मनोज कुमार बिंद, मो0 अनीश, मयंक त्रिपाठी, संजय कुशवाहा, शिवाकांत तिवारी, सोनू भटनागर, आशुतोष त्रिपाठी आदि पत्रकार उपस्थित रहे। सभा की अध्यक्षता तहसील अध्यक्ष रावेंद्र तिवारी तथा संचालन महामंत्री नीरज केसरवानी ने किया।

तीन लाख मतों से सपा के रामभुआल निषाद को हरा पहली बार लोकसभा पहुंचे थे रवि किशन, फिर मैदान में

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

गोरखपुर। गोरखपुर लोकसभा सीट से भाजपा ने दूसरी बार अभिनेता रवि किशन पर भरोसा जताया है। ये सीट सीएम योगी की परंपरागत सीट रही है। पहली बार रवि किशन ने अपने प्रतिद्वंदी को तीन लाख से अधिक मतों से शिकस्त दी थीभारतीय जनता पार्टी ने गोरखपुर लोकसभा की सीट पर दूसरी बार अभिनेता सांसद रवि किशन पर भरोसा जताया है। पहली बार 2019 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी सपा के रामभुआल निषाद को 3,01,664 वोटों के भारी अंतर से हराया था। गोरखपुर लोकसभा की सीट सीएम योगी की परंपरागत सीट है। दूसरी बार प्रत्याशी बनाए जाने पर रवि किशन और उनके समर्थक खासा जोस में हैं। वहीं, सपा ने पहले ही काजल निषाद के प्रत्याशी के तौर पर उतारा है।दरअसल, 29 वर्ष के लंबे अंतराल पर पहली बार किसी दूसरी पार्टी ने गोरखपुर लोकसभा सीट पर अपना कब्जा जमाया था। ये चुनाव था, 2017 का लोकसभा उप चुनाव। इसी वर्ष योगी आदित्यनाथ सूबे के मुख्यमंत्री बने

थे और उनके मुख्यमंत्री के बनने के बाद लोकसभा सीट पर उपचुनाव हुआ था।महागठबंधन के प्रत्याशी प्रवीण निषाद ने भाजपा के उम्मीदवार उपेंद्र शुक्ल को हराकर बड़ा उलटफेर किया था। इस जीत में निषाद और एमवाई फैक्टर ने जमकर काम किया। लेकिन, 2019 के लोकसभा चुनाव तक भाजपा और निषाद पार्टी में गठबंधन हो गया और प्रवीण निषाद को भाजपा पार्टी का दावेदार बनाकर संतकबीर नगर भेज दिया गया। इधर, गोरखपुर लोकसभा सीट पर भाजपा की तरफ से बॉलीवुड कलाकर रवि किशन को मौका दिया गया। और ऐसे ही चुनाव में तीन लाख मतों से अधिक विजई बन एक्टर के साथ सांसद रवि किशन बन गए।

ड्राइवर और क्लीनर किसी तरह डंपर से निकले, जाम में फंसे रहे वाहन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

बांदा। तिंदवारी थाना क्षेत्र के बेंदाघाट के यमुना पुल की रेलिंग तोड़कर डंपर लगभग 200 फीट की ऊंचाई पर लटक गया। इससे करीब 12 घंटे बांदा-फतेहपुर मार्ग लटक गया। हादसा देखकर पुल पर वाहन चालकों और ग्रामीणों की भीड़ लग गई। लोगों की मदद से डंपर में फंसे चालक को बाहर निकाला जा सका। मौका देखकर वह भाग निकला। उधर, कुछ

बाधित रहा। असोथर थाना क्षेत्र के कस्बा निवासी चालक सोनू मौरंग लोड करने बांदा जा रहा था। ललौली थाना क्षेत्र के दतौली यमुना पुल में रात नौ बजे पहुंचा था। इस दौरान वह ट्रक को ओवरटेक करने लगा, तभी डंपर रेलिंग तोड़कर नदी की ओर ही देर में एक छोर पर जमेनी गांव व दूसरी तरफ बांदा सीमा पर जाम लगा दोनों तरफ हादसे के बाद वाहनों का लगा जाम करीब छह किलोमीटर तक वाहनों की कतार लगी। दो क्रेन की लगाकर रविवार सुबह डंपर को बाहर निकाला जा सका।

शादी में ननिहाल आये प्रधानाचार्य की गोली मारकर हत्या, मध्यरात्रि में सोते समय सिर में मारी गोली

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

लखनउ। मामले में मृतक के मामा की तहरीर पर दो आरोपियों के खिलाफ नामजद एफआईआर दर्ज कराई गई है। एक को हिरासत में लिया गया है। गोंडा जिले के छपिया थाना क्षेत्र के चांदारत्ती गांव में मामा के घर शादी समारोह में शामिल होने गए निजी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य की रविवार की रात गोली मारकर हत्या कर दी गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। मामा की तहरीर पर छपिया पुलिस ने दो आरोपियों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया है छपिया थाना क्षेत्र के चांदारत्ती गांव निवासी आज्ञाराम यादव ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसके घर में शादी थी। शादी समारोह में शामिल होने के लिए उनके भांजे दिनेश कुमार यादव (32) आए थे। दिनेश सिसहनी गांव स्थित श्री सीडी यादव इंटर कॉलेज में प्रधानाचार्य के पद पर तैनात थे।रविवार की रात परिवार के सभी लोगों ने दिनेश के साथ भोजन किया। इसके बाद सभी सोने चले गए। दिनेश दुकान पर सोने के लिए चला गया। देर रात सिसहनी गांव के ही रहने वाले अजय वर्मा व राज

सिंह पहुंचे और दिनेश के सिर में गोली मार दी। बगल में सो रहे दिनेश के भाई उमेश यादव व धर्मेंद्र यादव ने दोनों आरोपियों को भागते समय देखा। इसकी सूचना दोनों ने परिजनों को दी। घटना की जानकारी होने पर पुलिस भी मौके पर पहुंची।दिनेश को नजदीकी अस्पताल के नाते सीमावर्ती बस्ती जिले के सीएचसी गौर ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। हत्या की सूचना पर प्रभारी निरीक्षक छपिया सतेंद्र वर्मा, प्रभारी निरीक्षक खोड़ारे मनोज पाठक व सीओ मनकापुर राजेश कुमार सिंह ने घटनास्थल का निरीक्षण किया।पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल ने बताया कि वारदात की सूचना पर मिलते ही पुलिस मौके पर गई थी। घटना के हर पहलू की जांच की जा रही है। मृतक के मामा की तहरीर पर दो आरोपियों के विरुद्ध नामजद मुकदमा कायम किया गया है। एक आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

अवन्तिका विकास समिति के प्रबंधकारिणी समिति का हुआ गठन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नैनी, प्रयागराज। अवन्तिका विकास समिति के कार्यसमिति की बैठक समिति कार्यालय में संपन्न हुई, जिसमे प्रबन्धकारिणी एवं कार्यकारिणी समिति का गठन सम्पन्न हुआ। बैठक की अध्यक्षता संयुक्त मंत्री, अनिल द्विवेदी कोषाध्यक्ष, आशुतोष मिश्र मीडिया प्रभारी चुने गये। साथ ही कार्यकारिणी सदस्य के रूप में महिला प्रकोष्ठ की मीना जायसवाल, अन्जुम नाज, बिन्दू राठौड़ तथा ए1 ब्लांक से ब्रिजेन्द्र

समिति के संयोजक गजेंद्र प्रताप सिंह एवं संचालन सह संयोजक बद्री प्रसाद मिश्र ने किया चयनित पदाधिकारियों में विनोद शंकर तिवारी अध्यक्ष, डी के सिंह व जगदम्बा प्रसाद शुक्ल उपाध्यक्ष, सुनील श्रीवास्तव महामंत्री, सुनील साहनी मंत्री, अशोक जायसवाल पाठक, ए ब्लॉक से गंगा प्रसाद ठाकुर, बी से अनिल मिश्र, सी से एन पी मिश्र, डी से केएल जायसवाल, विश्व बैंक से दीपक पटेल, ईई से सुभाष चन्द्र, ईएल से एम आर कुशवाहा, आदि का चयन सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ।

श्री लक्ष्मी पब्लिक स्कूल का द्वितीय वार्षिकोत्सव हुआ संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

प्रयागराज। यूँ तो शिक्षा के क्षेत्र में हर रोज़ नये विद्यालय खुलते जा रहे है , नये तकनीकी युग में नयी पद्धति से शिक्षा को नया आयाम श्रीवास्तव ,के पी ट्रस्ट के अद्यक्ष सुशील सिन्हा , वरिष्ठ समाज सेवी बी बी दूबे , भाजपा मंडल प्रभारी विनोद तिवारी एवं शिवम् अक्षयवट अस्पताल के संस्थापक डॉ अरविंद अभिभावकजनों को पुरस्कृत करके संस्था ने एक अलग और बेहतरीन प्रयास किया । सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका के रूप में अंजू सिंह को सम्मानित किया गया ।मीडिया जगत से

दिया जा रहा है । प्रयागराज के नैनी में श्री लक्ष्मी पब्लिक स्कूल ने भी शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिभावान छात्रों के साथ अनुभवी शिक्षकों के साथ एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया है । अपने द्वितीय वार्षिकोत्सव के कार्यक्रम में श्री लक्ष्मी पब्लिक स्कूल के प्रबंधक पवन श्रीवास्तव ने मुख्य अतिथि एम एन सी डॉ के पी राय के साथ दीप जलाकर माँ सरस्वती की वंदना कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया ।तत्पश्चात् बच्चों ने राम आयेंगे जैसे भजनों पर नृत्य करके माहोल को चार चाँद लगा दिया । मोबाइल फ़ोन के ग़लत प्रभाव को दिखाते हुए छात्र एवं छात्राओं ने अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया ।छात्र छात्राओं के साथ कार्यक्रम में अजय गुप्ता ,सुधांशु शर्मा, दिलीप जायसवाल,राम जी केशरवानी एवं श्रीकान्त शाह उपस्थित रहे । हेलो जॉब एवं जीसीईएल कोचिंग के संस्थापक प्रभाकर तिवारी एवं ज़िला अपराध निरोधक समिति के प्रभारी मनीष विश्वकर्मा ने अपनी विशेष उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी।

बारिश के बाद वाराणसी के ग्रामीण क्षेत्रों में दिखा कोहरा, खराब फसलों को लेकर किसान चिंतित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

वाराणसी। किसानों ने बताया कि बारिश से कोहड़ा, टमाटर, नेनुआ और लौकी की फसलें भी प्रभावित होंगी। इनमें फंगस लग जाने से

सब्जियां खराब हो जाएंगी। वाराणसी में शनिवार-रविवार को हुई बारिश-आंधी के बाद सोमवार को ठंड का एहसास हुआ। वहीं, ग्रामीणों इलाकों में सुबह कोहरा देखा गया। इस कारण स्थानीय लोग घरों में ही दुबके रहे। दूसरी तरफ, इस बारिश से किसानों का ज्यादा नुकसान हुआ है। खेतों में चना, अरहर और मसूर की खेती बर्बाद हो गई। इससे खेतिहर और लघु किसानों के माथे पर बल पड़ गया है।ढाब क्षेत्र के खेतों में कहीं-कहीं खेतों में पानी लग जाने से टमाटर, कद्दू और लौकी की खेती को भी नुकसान पहुंचा है। किसानों का कहना है कि पानी लगने से फसलें खराब हो जाएंगी। किसान रामजनम बताते हैं कि ऐसी बारिश से अरहर, चले, मसूर की कलियों में बाला (एक प्रकार का कीड़ा) लग जाता है। धूप होने पर खराब कलियां सूखकर गिर जाती हैं। वह बताते हैं कि इस बारिश से आम की फसलों का फायदा होगा।वाराणसी के ग्रामीण इलाकों में आलू की खेती कर रहे किसान बताते हैं कि इस बारिश से फसल सड़ जाने की संभावना है। एक-दो बार और बारिश हो गई तो सारी कमाई और सपने बेकार हो जाएंगे। वह बताते हैं कि इस बारिश से सबसे ज्यादा नुकसान सरसों की फसलों को हुआ है। वह बताते हैं कि खेतों में काटकर रखे गए सरसों भी भींग गए हैं।एक-दो दिन के दौरान खेतों में गेहूं की फसलें भी लोट गई हैं। किसानों की मानें तो इस बारिश से कोहड़ा, टमाटर, नेनुआ और लौकी की फसलें भी प्रभावित होंगी। इनमें फंगस लग जाने से सब्जियां खराब हो जाएंगी। बेमौसम बारिश से किसानों की मुश्किलें बढ़ गई हैं।

द्वार गेट डॉ भीमराव अंबेडकर स्मृति द्वारा, के नाम से ही बने गेट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। आजाद समाज पार्टी सोनभद्र ने ट्वीट कर जिलाधिकारी सोनभद्र को अवगत कराया की सोनभद्र जिला मुख्यालय रोड स्थित द्वार गेट डॉ भीमराव अंबेडकर स्मृति द्वारा, के नाम से गेट बना हुआ था जिसको पिछले साल अक्टूबर 2023 में जिला प्रशासन द्वारा मरम्त कराने के लिए कार्य शुरू किया गया था, 6 महीने वित जाने के बाद भी कार्य पूरा भी किया गया ऐसा लगता है की नाम को मिटाना चाहती है सरकार, डॉ अंबेडकर स्मृति द्वार के नाम से गेट जल्द नहीं बना तो किया जाएगा धरना प्रदर्शनरविकान्त जिलाध्यक्ष आजाद समाज पार्टी ने बताया कि उत्तर प्रदेश में बीजेपी की सरकार है मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, भी संविधान निर्माता बाबा साहब अम्बेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हैं सर झुकाते है लेकिन भाजपा के लोग जब बाबा साहब अम्बेडकर के पार्क, मूर्ति,या गेट की बात आती है तो दोहरी करण की राजनीति करती है अम्बेडकर के विचारों को मिटाना चाहती है भाजपा उत्तर प्रदेश के रामपुर में योगी आदित्यनाथ की पुलिस प्रशासन महापुरुषों के नाम गेट, पार्क नही देना / बनाना चाहती है सरकार, सोनभद्र में कई बार डॉ अंबेडकर की मूर्ति को क्षतिग्रस्त किया जाता है अपराधियों को थोड़ा सा भी भाई नहीं है पुलिस

बाबा साहब अम्बेडकर पार्क के लिए स्थानीय लोग मांग करते है तो गोली मारी जाती है ताजा घटना दर्शाता है कि दलितों का वोट बीजेपी को चाहिए, लेकिन उनको उनका हक अधिकार या प्रशासन का,मैं जिलाधिकारी सोनभद्र से मांग करता हूं की लोढ़ी मुख्यालय पर जाने वाली रोड़ स्थित द्वार गेट डॉ भीमराव अम्बेडकर स्मृति द्वार को जल्द पूरा कराए।

24 घंटे से गायब युवक का पेड़ से लटकता मिला शव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। बभनी थाना क्षेत्र के खोतोमहुआ ग्राम पंचायत के जौराही गांव में 24 घंटे से गायब युवक का रविवार की सुबह आम के पेड़ से गमछे के सहारे शव लटकता हुआ मिला। वह शनिवार की सुबह घर से निकला था। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए सीएचसी दुद्धी भेज दिया। खोतोमहुआ ग्राम पंचायत के जौराही गांव में रविवार की सुबह घर से दूर रामवृक्ष (37) पुत्र शिवलखन खरवार निवासी जौराही का शव आम के पेड़ से लटकता मिला। परिजनों के मुताबिक शनिवार की सुबह परिवार में कहासुनी के बाद वह घर से निकल गया था। जब वह दोपहर तक घर नहीं लौटा तो परिवार के लोग तलाश करने लगे। दिन भर तलाश करते रहे, लेकिन उसका पता नहीं चला। रविवार की सुबह युवक का शव घर से पांच सौ मीटर दूर गांव के राम लगन के घर के पास आम के पेड़ से लटकता हुआ मिला। घटना की सूचना मृतक के पिता शिवलखन ने बभनी पुलिस को दी। सूचना पर उप निरीक्षक तेज बहादुर सिंह घटनास्थल पर पहुंच गए। थानाध्यक्ष सुरेश चंद्र द्विवेदी ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और आगे की कार्रवाई की जा रही है।

बेमौसम बारिश से खेत में गिरी गेहूं की फसल, उत्पादन में आ सकती है गिरावट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। जिले में रविवार की भोर से सुबह 10 बजे तक रुक-रुक कर बारिश होती रही। बेमौसम हुई बारिश और तेज हवा चलने के कारण जगह-जगह गेहूं की फसलें खेत में गिर गई है। इससे गेहूं का उत्पादन प्रभावित होने का अंदेशा जताया जा रहा है। सोनांचल में शनिवार से ही मौसम खराब है। पूरे दिन आसमान में बादल छाए रहे और रात में बूंदाबांदी हुई। देर रात फिर मौसम खराब हो गया। रविवार की भोर में करीब चार बजे से सुबह 10 बजे तक रुक-रुक कर कभी तेज तो कभी धीमी बारिश होती रहीं। सुबह के वक्त बारिश होने की वजह कामकाजी लोगों को आवागमन में परेशानी हुई। वहीं ठंड में भी इजाफा हो गया है। जिला कृषि अधिकारी डॉ. हरिकृष्ण मिश्र ने बताया कि मौसम विभाग की तरफ से सोमवार को भी जिले में मौसम खराब रहने के साथ बारिश होने का अलर्ट जारी किया गया है। जो फसल खेत में गिर गई है, बारिश होने से उनके उपज में गिरावट आ सकती हैं। दलहन एवं तिलहन

की फसल के लिए बारिश नुकसानदेय साबित होगा। वहीं मौसम विज्ञान केंद्र चुर्क के प्रेक्षक राजन सिंह के मुताबिक रविवार को जिले का न्यूनतम तापमान 16.0 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 23.2 डिग्री सेल्सियस मापा गया। बारिश होने से तापमान में गिरावट दर्ज की जा सकती है। उधर, बारिश के बाद एक बार फिर से लोग गर्म कपड़े पहनना शुरू कर दिए हैं।

नगर क्षेत्र में दो सौ हैंडपंप खराब, पानी का संकट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मिर्जापुर। नगर क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर लगे करीब 200 हैंडपंप खराब हो गए हैं। इससे संबंधित इलाकों में पानी का संकट बढ़ता जा रहा है। खराब हैंडपंपों की मरम्मत नहीं होने समस्या गंभीर होती जा रही है। नगर क्षेत्र में लगभग 1200 हैंडपंप लगाए गए हैं। इनमें से लगभग 200 हैंडपंप खराब पड़े हैं। इसमें से 80 हैंडपंप रीबोर के लिए चिह्नित किए गए हैं। इसकी सूची जल निगम को भेजी गई है, लेकिन अभी तक खराब हैंडपंप ठीक नहीं हो सके हैं। नगर के संकटमोचन वार्ड, स्टेशन रोड, पुरानी दशमी तथा कई अन्य जगहों पर कई हैंडपंप खराब पड़े हैं। कई जगह हैंडपंप से पानी में बालू आ रहा है। उधर, नगर में कई जगह मिनी ट्यूबवेल भी खराब पड़े हैं। संकटमोचन वार्ड के घास की गली में लगा मिनी ट्यूबवेल खराब है। इसी प्रकार स्टेशन रोड पर मिनी ट्यूबवेल का बोर फेल हो गया। वहां दूसरा बोर कराया गया, लेकिन केवल पाइप लगाकर छोड़ दिया गया है। इस क्षेत्र में तीन-चार महीने से पानी की समस्या है। पूरे नगर पालिका क्षेत्र में 800 मिनी ट्यूबवेल लगाए गए हैं। इनमें से विभिन्न वार्डों में करीब 100 मिनी ट्यूबवेल खराब पड़े है। जलकल अभियंता सुधीर कुमार वर्मा का कहना है कि नगर में पानी की कोई समस्या नहीं है। जो हैंडपंप खराब हैं, उन्हें ठीक कराया जा रहा है।

प्रोजेक्ट अलंकार से संवारे जाएंगे 34 राजकीय विद्यालय

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में आधारभूत संरचना उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार के निर्देशन में प्रोजेक्ट अलंकार योजना का शुभारंभ रविवार को हुआ। मुख्यमंत्री ने वर्चुअल माध्यम से प्रोजेक्ट अलंकार के तहत जिले के 34 राजकीय विद्यालयों में होने वाले निर्माण कार्यों का शिलान्यास किया। गोरखपुर में हुए मुख्य कार्यक्रम का प्रसारण जिले के डायट परिसर में हुआ। यहां कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सांसद पकौड़ी लाल कोल, अपना दल-एस के जिलाध्यक्ष सत्यनारायण पटेल, डायट प्राचार्य प्रकाश सिंह, ब्लॉक प्रमुख सदर अजीत रावत मौजूद रहे। अतिथियों ने विभिन्न कार्यों के शिलापट्ट का अनावरण किया। डीआईओएस राजेंद्र यादव ने बताया कि सत्र 2023-24 में इस योजना के अंतर्गत जिले के 34 राजकीय विद्यालयों का चयन हुआ है। राजकीय इंटर कॉलेज घोरावल में 10 कक्षा कक्ष, राजकीय इंटर कॉलेज कोन में तीन कक्षा कक्ष के निर्माण सहित विभिन्न राजकीय विद्यालयों में मल्टीपरपज हाल, पुस्तकालय कक्ष, भौतिक-रसायन विज्ञान प्रयोगशाला, जीव विज्ञान प्रयोगशाला, अतिरिक्त कक्षा कक्ष व स्वच्छ पाइप पेयजल योजना के कार्य कराए जाएंगे।

2.15 करोड़ से सड़क, नालियों के दिन बहुरेंगे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। घोरावल नगर पंचायत में दो करोड़ 15 लाख रुपये की लागत से बदहाल नालियों और सड़कों की मरम्मत कराई जाएगी। इसमें सीसी रोड निर्माण का काम भी है। यह सभी कार्य जिला नगरीय विकास अभिकरण की तरफ से कराए जाएगें। विधायक अनिल कुमार मौर्य ने बताया कि घोरावल नगर के विकास कार्यों के लिए 2.15 करोड़ रुपये स्वीकृत किया गया है। डूडा की तरफ से नगर में मुक्खा मोड से हरियहवा तालाब होते हुए कांशीराम आवास प्रथम के बगल में नाली तथा आरसीसी रोड के निर्माण कराया जाएग। इसके निर्माण पर 27.40 लाख रुपये खर्च होगा। इसी तरह जुडिया से मिर्जापुर संपर्क मार्ग तक 23.90 लाख की लागत से सीसी रोड का निर्माण, हरियहवा पोखरा से चंद्रबली सिंह दीवान जी के पूरा तिराहे तक नाली निर्माण के लिए 25.31 लाख, बरदहवा होलिका मोड से सोनांचल इंका तक सीसी रोड निर्माण के लिए 35.28 लाख, बरई टोला पंप हाउस से राजकुमार कोल के घर तक सीसी रोड व नाली निर्माण के लिए 32.45 लाख रुपये आवंटित हुआ है।

हाईवे पर दो किमी में लगे सैकड़ों डिवाइडर गायब, दुधनाथ तिराहा से अष्टभुजा मार्ग पर हादसे का खतरा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मिर्जापुर। मिर्जापुर के इस मार्ग पर कई बार तो हादसा होने पर टूट जाने पर वहां से डिवाइडर को हटाया जाता है, फिर वहां डिवाइडर नहीं लगाया जाता है। कई जगहों पर डिवाइडर को निकाल लिया गया है। स्थानीय लोगों की मानें तो नशेड़ी किस्म के लोग डिवाइडर की चोरी कर रहे हैं। हाईवे और चौड़े मार्गों पर डिवाइडर इसलिए लगाया जाता है कि गाड़ियां अपने साइड से चले और किसी प्रकार की कोई बाधा न उत्पन्न हो सके, पर मिर्जापुर नगर से विंध्याचल की ओर जाने वाले हाईवे मार्ग पर दो किमी मार्ग में लगे सैकड़ों डिवाइडर को उखाड़कर चोर चोरी कर ले गए। डिवाइडर चोरी की घटना पिछले कई माह से जारी है, जिस कारण दो किमी के दायरे में नाम मात्र के ही डिवाइडर बचे हैं।

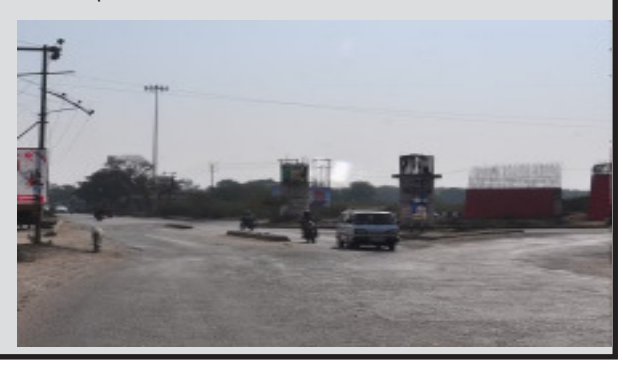

कार ने बाइक को मारी टक्कर, दंपती की मौत, दो बेटियां घायल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। सोनभद्र सीमा से सटे मध्य प्रदेश के सिंगरौली में स्थित बरका चौकी क्षेत्र के धौहनी मुख्य मार्ग पर रविवार को कार ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में दंपती की मौके पर मौत हो गई, जबकि दो बच्चे घायल हुए हैं। दुर्घटना के बाद चार पहिया वाहन को छोड़कर चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने वाहन को जब्त कर लिया है। फरार चालक के खिलाफ मामला दर्ज करते हुए पुलिस जांच में जुटी है। पुलिस के मुताबिक कछरा सिंह बृजेंद्र सिंह रविवार को पत्नी सुनीता सिंह व दो बच्चियों को साथ लेकर बाइक से बेटहाडांड़ बरगवां रिश्तेदारी में जा रहा था। तभी धौहनी मुख्य मार्ग पर तेज रफ्तार कार ने बाइक को टक्कर मार दी। मौके पर ही बृजेंद्र सिंह व उसकी पत्नी सुनीता की मौत हो गई। वहीं रीना सिंह (4) व जूही सिंह (1) गंभीर रूप से घायल हैं। दुर्घटना के बाद कार चालक मौके से वाहन को छोडक फरार हो गया। पुलिस ने घायल बच्चियों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। फरार चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर विवेचना में जुटी है।

ऊंची कूद, दौड़, गोला फेंक, में विद्यार्थियों ने दिखाया दम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

मिर्जापुर। श्रीमती इंदिरा गांधी राजकीय पीजी कॉलेज परिसर में आयोजित वार्षिक क्रीड़ा समारोह का शनिवार को समापन किया गया। इसमें विद्यार्थिन्यों ने ऊंची कूद, दौड़, लंबी कूद, गोला फेंक, चक्का तथा भाला प्रक्षेप समेत विभिन्न खेलों में प्रतिभाग करके प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख जयंत कुमार रहे। विशिष्ट अतिथि कौशलेंद्र कुमार सिंह तथा काशी नरेश राजकीय पीजी कॉलेज के समाजशास्त्र विभाग के डॉ. सुजीत सिंह की मौजूदगी में विद्यार्थिन्यों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया। प्रतियोगिता में छात्र वर्ग 100 मीटर दौड़ में शिखा दुबे प्रथम, कल्पना द्वितीय, मंजू लता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी तरह से 200 मीटर दौड़ में शिखा दुबे प्रथम, संजय मौर्य द्वितीय, मंजू लता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके अलावा 400 मीटर दौड़ में संजू मौर्य, कल्पना और सुमन पाल ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार लंबी कूद में शिखा दुबे प्रथम, मंजू लता द्वितीय, कल्पना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। ऊंची कूद में सुमन पाल प्रथम, सुमन दुबे द्वितीय, शिखा दुबे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गोला प्रक्षेप में चंदा प्रथम, गुड़िया द्वितीय तथा कविता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। चक्का प्रक्षेप में चंदा प्रथम, नीतू यादव द्वितीय तथा उपमा मौर्य ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कुर्सी दौड़ में कविता प्रथम ,गुड्डन द्वितीय ,सुमन कुमारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाला प्रक्षेप में नीतू यादव प्रथम, गुड़िया द्वितीय, सोनम मिश्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रथम, विकास यादव द्वितीय, रुद्र प्रताप ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर एण्ड सेफ्टी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
फायर सेफ्टी मैनेजमेन्ट कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन इंजिनियर, सिस्टम सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी मैनेजमेन्ट के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
महानिदेशक अग्निशमन सुरक्षा एवं आपात सेवा उत्तर प्रदेश
C.O.P.A.
Fitter
Security Service
Electric Technician
Electrician
Computer Application
Repair of Refrigerator & A.C.
Fire Safety & Industrial Security
Computer Teacher Training
Computer Hardware & Maintenance
Welding Technology
Certificate in YOGA
Message
नन्दी गोपाल गुप्ता 'नन्दी'
मंत्री
स्टाम्प न्यायालय शुल्क, पंजीयन एवं नागरिक उड्डयन विभाग
उत्तर प्रदेश
मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि आपकी संस्था "नैनी आद्यौगिक प्रशिक्षण केन्द्र" द्वारा विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी "प्रवेश विवर्जिका" नाम की पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका छात्र / छात्राओं में चेतना, सृजनात्मक शक्ति, बौद्धिक क्षमता एवं उनकी वैचारिक एवं मानसिक अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने में अवश्य सार्थक सिद्ध होगी।
संस्था द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका "प्रवेश विवर्जिका" के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं!
भवदीय
नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी'
Nand Goapal Gupta
नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी'
मंत्री
N.C.V.T. D.G.E.T से मान्यता प्राप्त
फिटर
आसान किस्तों में फीस जमा करने की सुविधा
COPA
छात्रवृत्ति की सुविधा
100% प्लेसमेंट की गारंटी
अप्रेन्टिशिप की सुविधा
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

उस्मान खान ने जड़ा रिकॉर्ड शतक मुल्तान ने कराची को धोया रिजवान की टीम सबसे पहले प्लेऑफ में पहुंची

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। पाकिस्तान सुपर लीग 2024 के 19वें मैच में कराची किंग्स और मुल्तान सुल्तान के बीच रोमांचक मुकाबला खेला गया। इस मैच में मुल्तान सुल्तान ने कराची किंग्स को 20 रन से मात दी और जीत के साथ ही मुल्तान सुल्तान की टीम इश्थ् 2024 के प्लेऑफ में सबसे पहले पहुंच गई।पाकिस्तान सुपर लीग 2024) के 19वें मैच में कराची किंग्स और मुल्तान सुल्तान के बीच रोमांचक मुकाबला खेला गया। इस मैच में मुल्तान सुल्तान ने कराची किंग्स को 20 रन से मात दी और जीत के साथ ही मुल्तान सुल्तान की टीम इश्थ् 2024 के प्लेऑफ में सबसे पहले पहुंच गई।मैच में मुल्तान सुल्तान ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग का फैसला किया, जो कि उनके पक्ष में आया। पहले बल्लेबाजी करते हुए मुल्तान

सुल्तान की टीम ने 20 ओवर में 3 विकेट के नुकसान पर 189 रन बनाए। उस्मान खान ने नाबाद शतकीय पारी खेली और टीम को यह स्कोर खड़ा करने में अहम योगदान दिया। इसके जवाब में कराची किंग्स की टीम 20ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 169 रन ही बना सकी। इस तरह मुल्तान सुल्तान ने 20 रन से मैच जीत लिया।दरअसल, 2024 के 19वें मैच में टॉस जीतकर पहले बैटिंग करते हुए मुल्तान सुल्तांस की टीम की तरफ से रीजा हेंड्रिक्स के रूप में टीम को पहला झटका लगा। रीजा 13 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद कप्तान मोहम्मद रिजवान ने टीम की पारी को संभालने कू जिम्मेदारी उठाई।

रोहित शर्मा को कप्तान बनाने के फैसले पर अपनी पीठ थपथपा रहे सौरव गांगुली

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। रोहित शर्मा ने बतौर भारतीय कप्तान अपनी कैप्टेंसी से अब तक खासा प्रभावित किया है। रोहित की कप्तानी में पिछले साल खेले गए वनडे विश्व कप में टीम इंडिया ने फाइनल तक का सफर

तय किया था। सिर्फ इतना नहीं, हिटमैन की कप्तानी में भारतीय टीम ने पिछले कुछ समय में क्रिकेट के तीनों ही फॉर्मेट में कई बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं।सौरव गांगुली ने कप्तान रोहित शर्मा की जमकर तारीफ की है। दादा का कहना है कि रोहित के अंदर उन्हें टैलेंट नजर आया था और इसी वजह से उन्होंने हिटमैन को टीम की कप्तानी सौंपी थी। रोहित की कप्तानी में टीम इंडिया ने इंग्लैंड के खिलाफ खेली जा रही टेस्ट सीरीज को अपने नाम कर लिया है। रांची टेस्ट में भारत ने इंग्लैंड को 5 विकेट से हराया था।हालांकि, जब विराट कोहली से कप्तानी छीनकर रोहित के हाथों में टीम की बागडोर सौंपी गई थी, तो कई तरह के सवाल खड़े हुए थे। बतौर कप्तान रोहित की सफलता से सौरव गांगुली काफी खुश हैं। दादा रोहित को कैप्टेंसी सौंपने के फैसले को लेकर अपनी पीठ थपथपा रहे हैं।

फील्डिंग एफर्ट हो तो ऐसा छक्के के लिए जाती गेंद पर रनआउट हो गया बल्लेबाज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। क्रिकेट के मैदान पर

यूं तो आपने कई लाजवाब फील्डिंग एफर्ट देखी होंगी। फील्डर को शानदार कैच लपकते और बाउंड्री लाइन पर छक्के के लिए जाती गेंद को रोकते हुए भी आपने खूब देखा होगा। हालांकि, सिक्स के लिए बाउंड्री पार जाती गेंद पर किसी बल्लेबाज को आपने रनआउट होते हुए देख है? शायद आपका जवाब भी नहीं होगा, लेकिन ऐसी ही एक अजीबोगरीब घटना नेपाल और नीदरलैंड्स के बीच खेले गए मैच में घटी है।नेपाल की धरती पर ट्राई सीरीज खेली जा रही है। इस सीरीज में नेपाल के अलावा नीदरलैंड्स और नामीबिया की टीम हिस्सा ले रही हैं।

आईपीएल 2024 से पहले बच्चों के साथ बच्चे बन गए पंत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। ऋषभ पंत आईपीएल 2024 में वापसी की लिए पूरी तरह से तैयार हैं। हालांकि, अभी कोई की उम्मीद की जा रही है। फैंस को उम्मीद है कि वह पूरी तरह से फिट हो गए हैं। पंत ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया रहे हैं और उन्होंने इसके जरिए अपने बचपन की याद को भी ताजा किया। वायरल वीडियो में दिखा रहा है कि ऋषभ पंत कुछ बच्चों माप भी रहे हैं और गोली को स्ट्राइक कर रहे हैं।बता दें कि पंत दिसंबर में हुए मिनी ऑक्शन के दौरान दिल्ली कैपिटल्स की

आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। इससे पहले उनका एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें वह बच्चों के साथ कंचे (गोली) खेलते हुए नजर आ रहे हैं।साल 2022 में कार हादसे के बाद से ऋषभ पंत क्रिकेट के मैदान से दूर हैं। हालांकि आईपीएल 2024 के जरिए उनकी मैदान पर वापसी है।साल 2022 में कार हादसे के बाद से ऋषभ पंत क्रिकेट के मैदान से दूर हैं। हालांकि, आईपीएल 2024 के जरिए उनकी मैदान पर वापसी की उम्मीद की जा रही है। फैंस को उम्मीद है कि वह पूरी तरह से फिट हो गए हैं। पंत ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वह कंचे खेल के साथ कंचे खेल रहे हैं और एक सधे खिलाड़ी की तरह लगातार कंचों को हिट करते दिखाई दे रहे हैं। बीच-बीच में वह पूछ रहे हैं कि कितना हुआ तो बच्चे उन्हें बात रहे हैं। वहीं एक बच्चा कहता है कि आप अच्छा खेल रहे हैं। वीडियो में दिख रहा है कि पंत अपने हाथ से दूरी को टेबल पर पैडल उठाते हुए देखा गया था। गौरतलब हो कि वह एनसीए में रिहैब पर हैं। कुछ दिनों पहले उन्हें प्रैक्टिस मैच खेलते हुए भी देखा गया था। ऋषभ पंत ने 98 आईपीएल मैच खेले हैं। पंत ने 34.61 की औसत और 147.97 की स्ट्राइक रेट से 2838 रन बनाए हैं।

इस सप्ताह की शुरुआत प्रसन्नता के साथ होगी। लेकिन बातचीत में संवत रहें। शिक्षा से जुड़े काम पर ध्यान देने की आवश्यकता है। धैर्य रखना होगा। भागदौड़ बनी रहेगी।

इस सप्ताह आत्म संवत रहने की आवश्यकता है। मन परेशान रहेगा। गुस्सा पर नियंत्रण रखना होगा। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के

मन में आशा-निराशा बनी रहेगी। नकारात्मक विचारों से बचें। स्वास्थ्य का ध्यान रखने की आवश्यकता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। नौकरी में कार्यभार में बढ़ोतरी

सप्ताह के शुरूआत से वाणी में मधुरता रहेगी, लेकिन धैर्यशीलता बनाए रखने की कोशिश करें। शिक्षा से जुड़े कामों में सफलता मिलेगी। संतान के स्वास्थ्य का ध्यान रखना

सप्ताह के पहले दिन से मन में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। नौकरी में तरक्की मिलने की संभावना है। शासन सत्ता का योग बन रहा है। भवन सुख मिलेगा। शिक्षा से जुड़े काम में

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में मेहनत ज्यादा होगी। परिवार की जिम्मेदारी बढ़ेगी। नौकरी में कार्यभार बढ़ेगा। मन परेशान हो सकता है। स्वभाव में

नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा, स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। वाणी में कठोरता का भाव रहेगा, बातचीत में संयत रहें। वस्त्रों

इस सप्ताह परिवार के साथ धार्मिक यात्रा के योग बन रहे हैं। माता का सहयोग भी प्राप्त होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। ज्यादा उत्साही होने से बचें।

नौकरी में तरक्की होने की संभावना है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव बना रहेगा। मानसिक शांति रहेगी। गुस्सा पर काबू रखें।

परिवार में हंसी-खुशी का माहौल रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। नकारात्मक विचारों से बचाव

मन खुश रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।

पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ सकती हैं। मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

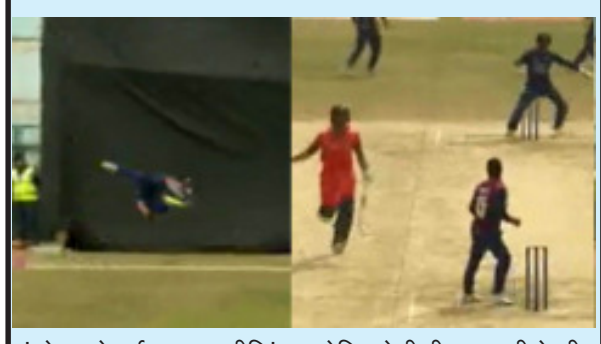

शार्दुल ठाकुर के शतक से मजबूत स्थिति में मुंबई, विदर्भ के खिलाफ मध्य प्रदेश ने हासिल की बढ़त

मुंबई, प्रेट्र। शार्दुल ठाकुर की 109 रन की शतकीय पारी और तनुष कोटियान की नाबाद 74 रन की अर्धशतकीय पारी आर साई किशोर के छह विकेट के शानदार गेंदबाजी प्रदर्शन पर भारी पड़ गई, जिससे मुंबई ने रविवार को यहां रणजी ट्राफी सेमीफाइनल के दूसरे दिन तमिलनाडु पर पहली पारी के आधार पर 207 रन की बढ़त बना ली।रणजी ट्रॉफी 2024 के दूसरे सेमीफाइनल में तमिलनाडु के खिलाफ मुंबई ने बड़ी बढ़त हासिल कर ली है। स्टंप तक मुंबई ने नौ विकेट गंवाकर 353 बाद शार्दुल ने महज 104 गेंद में 13 चौके और चार छक्के की मदद से शतकीय पारी खेलकर टीम की वापसी कराईमुंबई ने सुबह दो विकेट पर 45 रन से आगे खेलना शुरू किया। इसके बाद श्रेयस अय्यर को छोड़कर साई किशोर ने मुंबई के पांच विकेट झटके दिए। अय्यर (03) तेज गेंदबाज संदीप वारियर का शिकार हुए जिससे तमिलनाडु मेजबान टीम की बराबरी पर लग रही थी। लेकिन शार्दुल ने तमिलनाडु के प्रत्येक गेंदबाज पर दबाव बनाया और महत्वपूर्ण साझेदारी की

रन बना लिए थे और कोटियान के साथ तुषार देशपांडे 17 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। विदर्भ के खिलाफ मध्य प्रदेश टीम भी मजबूत स्थिति में नजर आ रही है। टीम ने पहली पारी के आधार पर 82 रन की बढ़त ली हैस्टंप तक मुंबई ने नौ विकेट गंवाकर 353 रन बना लिए थे और कोटियान के साथ तुषार देशपांडे 17 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। मुंबई ने एक समय 106 रन पर सात विकेट गंवा दिए थे जिसके बदौलत मुंबई को बढ़त दिलाई।शार्दुल ठाकुर ने हार्दिक तमोर (35 रन) के साथ मिलकर आठवें विकेट के लिए 105 रन की शतकीय साझेदारी के बाद कोटियान के साथ नौवें विकेट के लिए 79 रन की भागीदारी की। शार्दुल ने इच्छानुसार रन जुटाए और गेंद को सीमारेखा पार कराने का एक भी मौका नहीं छोड़ा जिससे इस दौरान उन्होंने छक्के से सभी प्रारूपों में अपना पहला शतक भी जड़ दिया।

धर्मशाला में यशस्वी जायसवाल के नाम जुड़ेगी एक और बड़ी उपलब्धि

स्पोर्ट्स डेस्क, नई दिल्ली। यशस्वी जायसवाल का बल्ला इंग्लैंड के खिलाफ खेले गए अब तक चार टेस्ट मैचों में जमकर चला है।

यशस्वी को इंग्लिश बॉलिंग अटैक अब तक खूब रास आया है और वह 4 मैचों में 93.57 की औसत से 655 रन कूट चुके हैं। भारतीय सलामी बल्लेबाज इस सीरीज में कई बड़े रिकॉर्ड्स को चकनाचूर कर चुका है। हालांकि, धर्मशाला में यशस्वी के पास एक और खास उपलब्धि हासिल करने का सुनहरा मौका होगा।यशस्वी जायसवाल ने इंग्लैंड के खिलाफ खेली जा टेस्ट सीरीज में अब तक कुल 23 छक्के जमाए हैं। यशस्वी भारत की ओर से एक टेस्ट सीरीज में सर्वाधिक सिक्स लगाने का रोहित शर्मा का रिकॉर्ड पहले ही ध्वस्त कर चुके हैं। धर्मशाला में अगर यशस्वी तीन और सिक्स जमाने में सफल रहते हैं तो वह टिम साउदी को खास मामले में पीछे छोड़ देंगे।यशस्वी जायसवाल ने इंग्लैंड के खिलाफ खेली जा टेस्ट सीरीज में अब तक कुल 23 छक्के जमाए हैं। यशस्वी भारत की ओर से एक टेस्ट सीरीज में सर्वाधिक सिक्स लगाने का रोहित शर्मा का रिकॉर्ड पहले ही ध्वस्त कर चुके हैं।धर्मशाला में अगर यशस्वी तीन और सिक्स जमाने में सफल रहते हैं, तो वह इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बैटर बन जाएंगे। यशस्वी से आगे अभी टिम साउदी और सर विव रिचड्र्स हैं। साउदी ने इंग्लिश बॉलिंग अटैक के खिलाफ 25 सिक्स लगाए हैं, तो विव रिचड्र्स ने 34 छक्के जमाए हैं।यशस्वी को इस सीरीज में 700 रन पूरे करने के लिए 45 रन की दरकार है। यशस्वी धर्मशाला में होने वाले पांचवें टेस्ट में 45 रन बनाने में सफल रहते हैं, तो वह भारत-इंग्लैंड सीरीज में 700 रन बनाने वाले पहले भारतीय बल्लेबाज बन जाएंगे। भारत और इंग्लैंड टेस्ट सीरीज में 700 रन का आंकड़ा सिर्फ ग्राहम गूच और जो रूट ने पार कर सके हैं। 1990 में गूच ने 752 रन बनाए थे, जबकि 2021 में रूट ने 737 रन ठोके थे।यशस्वी जायसवाल की निगाहें सुनील गावस्कर के ऑलटाइम रिकॉर्ड पर भी होगी। दरअसल, भारत के लिए एक टेस्ट सीरीज में सर्वाधिक रन बनाने का रिकॉर्ड सुनील गावस्कर के नाम है। गावस्कर ने साल 1971 में वेस्टइंडीज के खिलाफ 774 रन कूटे थे।

रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर फैन्स को दिलाई डुप्लेसी-डिविलियर्स की याद, बाउंड्री लाइन पर बनीं सुपरवुमन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। महिला प्रीमियर लीग 2024 के 9वें मैच में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर को मुंबई इंडियंस के हाथों करारी हार का सामना करना पड़ा। आरसीबी की ना तो बैटर्स कुछ खास कमाल दिखा सकीं और ना ही गेंदबाज टीम की हार को टाल पाईं। हालांकि, टीम की फील्डर्स ने एक-एक रन बचाने के लिए खुद को मैदान पर पूरी तरह से झोंका। 2024 मुंबई इंडियंस की पारी के छठे ओवर की आखिरी गेंद पर श्रेयंका पाटिल ने अपनी फील्डिंग एफर्ट से हर किसी को हैरान कर दिया। दरअसल हेली मैथ्यूज ने सोफी डिवाइन की गेंद को बाउंड्री लाइन के पार पहुंचाने का प्रयास किया और जोरदार शॉट लगाया। गेंद को पहली नजर में देखकर लगा कि बॉल सीधा सिक्स के लिए जाएगीश्रेयंका पाटिल की ऐसी ही एक फील्डिंग एफर्ट का वीडियो सोशल मीडिया पर खुद वायरल हो रहा है। श्रेयंका ने बाउंड्री लाइन पर अपनी एफर्ट से आरसीबी फैन्स को एबी डिविलियर्स और फाफ डुप्लेसी की याद दिला दी।मुंबई की पारी के छठे ओवर की आखिरी गेंद पर श्रेयंका पाटिल ने अपनी फील्डिंग एफर्ट से हर किसी को हैरान कर दिया। दरअसल, हेली मैथ्यूज ने सोफी डिवाइन की गेंद को बाउंड्री लाइन के पार पहुंचाने का प्रयास किया और जोरदार शॉट

लगाया। गेंद को पहली नजर में देखकर लगा कि बॉल सीधा सिक्स के लिए जाएगी। हालांकि, बाउंड्री लाइन पर फील्डिंग कर रहीं श्रेयंका पाटिल ने हवा में छलांग लगाते हुए गेंद को बाहर की तरफ फेंक दिया।श्रेयंका ने सिक्स के लिए जाती गेंद को लगभग कैच में तब्दील कर ही दिया था, लेकिन वह अपना बैलेंस बरकरार नहीं रख सकीं। हालांकि, श्रेयंका मैथ्यूज के सिक्स को रोकने में जरूर सफल रहीं। सोशल मीडिया पर श्रेयंका की लाजवाब फील्डिंग एफर्ट का वीडियो जमकर वायरल हो रहा है और फैन्स भारत की युवा खिलाड़ी की खूब तारीफ कर रहे हैं।मुंबई इंडियंस के खिलाफ आरसीबी को इस सीजन की लगातार दूसरी हार का मुंह देखना पड़ा। पहले बल्लेबाजी करते हुए बैंगलोर की टीम 20 ओवर में 6 विकेट खोकर स्कोर बोर्ड पर सिर्फ 131 रन ही लगा सकी। टीम की ओर से एलिसा पैरी ने सर्वाधिक 44 रन बनाए। हालांकि, 132 रन के लक्ष्य का आरसीबी की गेंदबाज बचाव करने में नाकाम रहीं और मुंबई ने इस टारगेट को सिर्फ 15.1 ओवर में सिर्फ 3 विकेट खोकर हासिल कर लिया।

आईपीएल 2024 को भुनाया, तो ट्रैक पर आएगा करियर, रनों के लिए भूखा होगा विकेटकीपर बैटर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। ईशान किशन इन दिनों आलोचकों के निशाने पर हैं। बीसीसीआई ने भी सालाना सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट से विकेटकीपर बल्लेबाज को बाहर कर दिया है। झारखंड के युवा बल्लेबाज को घरेलू क्रिकेट में ना खेलने की सजा मिली है। ईशान के लिए टीम इंडिया में आखिरी इंटरनेशनल मैच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 28 नवंबर को खेला था।ऐसा हम नहीं कह रहे, बल्कि भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज आकाश चोपड़ा का ऐसा मानना है। आकाश के अनुसार, ईशान रन बनाने के लिए भूखे होंगे और उनका इंटरनेशनल करियर में

वापसी करने के दरवाजे अब सिर्फ आईपीएल 2024 में धमाल मचाने के बाद ही खुल सकते हैं।बीसीसीआई के सालाना सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट से बाहर किए गए ईशान किशन के लिए आईपीएल 2024 बेहद अहम होगा। भारत के पूर्व बल्लेबाज आकाश चोपड़ा का कहना है कि ईशान के लिए इंडियन प्रीमियर लीग का 17वां सीजन काफी महत्वपूर्ण होगा और वह रन बनाने के लिए भूखे भी होंगे। ईशान किशन ने अपना आईपीएल में रन बनाने से ट्रैक पर आ सकता है।ईशान किशन और श्रेयस अय्यर को बीसीसीआई ने सालाना सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट में शामिल नहीं किया है। बोर्ड के कई बार कहने के बावजूद ईशान-अय्यर ने घरेलू क्रिकेट से दूरी बनाई रखी, जिसका खामियाजा दोनों प्लेयर्स को भुगतना पड़ा है। ईशान किशन ने अपना आखिरी इंटरनेशनल मैच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 28 नवंबर को खेला था।

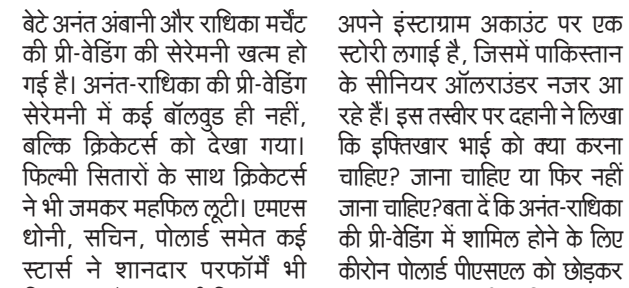

पाकिस्तान के क्रिकेटर शाहनबाज दहानी भी अनंत-राधिका की प्री-वेडिंग में हुए शामिल की स्टोरी ने गर्म कर दिया माहौल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। भारत और एशिया के सबसे अमीर मुकेश अंबानी के छोटे दहानी की स्टोरी खूब वायरल हो रही है।दरअसल, पाकिस्तान के तेज गेंदबाज शाहनवाज दहानी ने

बेटे अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की प्री-वेडिंग की सेरेमनी खत्म हो गई है। अनंत-राधिका की प्री-वेडिंग सेरेमनी में कई बॉलवुड ही नहीं, बल्कि क्रिकेटर्स को देखा गया। फिल्मी सितारों के साथ क्रिकेटर्स ने भी जमकर महफिल लूटी। एमएस धोनी, सचिन, पोलार्ड समेत कई स्टार्स ने शानदार परफॉर्मेंस भी किया।सोशल मीडिया पर पाकिस्तान के युवा गेंदबाज शाहनबाज दहानी की एक स्टोरी लगाई जिसमें इफ्तिखार अहमद हाथ में एक पर्ची को बहुत ध्यान से पढ़ते हुए नजर आ रहे हैं। शाहनबाज ने इस तस्वीर पर कैप्शन लिखा कि इफ्तिखार भाई को भी अनंत-राधिका की प्री-वेडिंग का न्यौता आया अब उन्हें क्या करना चाहिए जाना चाहिए या नहीं? अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक स्टोरी लगाई है, जिसमें पाकिस्तान के सीनियर ऑलराउंडर नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर पर दहानी ने लिखा कि इफ्तिखार भाई को क्या करना चाहिए? जाना चाहिए या फिर नहीं जाना चाहिए?बता दें कि अनंत-राधिका की प्री-वेडिंग में शामिल होने के लिए कीरोन पोलार्ड पीएसएल को छोड़कर पहुंचे। वहीं, भारतीय क्रिकेटर्स में एमएस धोनी, सचिन तेंदुलकर, रोहित शर्मा, जहीर खान जैसे दिग्गज इस जश्न का हिस्सा बने, लेकिन पाकिस्तान का कोई भी क्रिकेटर अनंत-राधिका की प्री-वेडिंग में नजर नहीं आये इस बीच शाहनवाज दहानी की स्टोरी जमकर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है, क्योंकि पाकिस्तान की तरफ से कोई भी प्लेयर अनंत की प्री-वेडिंग में नहीं शामिल था।

सम्पादकीय

मुछआरा समुदाय के गीतों में बसता है पंछियों का संसार

इस लेख में इस 'कोलीगीत' के माध्यम से स्थानीय पक्षियों और पौधों की प्रजातियों का विशेष उल्लेख किया गया है। जैसे-जैसे समय बदलता है, वैसे-वैसे आसपास की प्रकृति और मानव जीवन शैली भी बदलती है। मछुआरा समाज एक मानव समूह है जिसकी जीवन यात्रा समुद्र की लहरों पर सवार होकर चल रही है। महाराष्ट्र को लगभग सात सौ-बीस किलोमीटर की तटरेखा का आशीर्वाद प्राप्त है, जिसके किनारों पर मुख्य रूप से 'कोली' समुदाय पीढ़ियों से रह रहा है, जो मछली पकड़ने के माध्यम से अपनी आजीविका कमा रहा है।प्रकृति पूरक जीवन शैली और सहजता इस समाज की विशेषता है, इसीलिए समाज की परम्परागत 'कोलीगीते' चाहे वह विवाह हो, जन्मदिन हो, उत्सव हो, विभिन्न धार्मिक समारोह हों या सामाजिक जागरूकता की अवधारणा, उनके जीवन की अभिव्यक्ति के प्रभावी साधन हैं।इस लेख में इस 'कोलीगीत' के माध्यम से स्थानीय पक्षियों और पौधों की प्रजातियों का विशेष उल्लेख किया गया है। जैसे-जैसे समय बदलता है, वैसे-वैसे आसपास की प्रकृति और मानव जीवन शैली भी बदलती है। यदि हम अतीत के कोलीगीत और वर्तमान के कोलीगीत का पता लगाएं तो हम निश्चित रूप से 'एकवीरा' यहां भगवान परशुराम और उस मछुआरे के बीच के संबंध को बताती है जिसने समुद्र को काटकर कोंकण की भूमि बनाई थी। शाहिर विठ्ठल उमप द्वारा रचित यह कोलीगीत हमारे सामने कोली मछली पकड़ने वाले समुदाय की बिक्री कौशल और प्रबंधन के पारंपरिक ज्ञान के अंतर्संबंध को व्यक्त करता है। घेऊनशी जा रं ताजा ताजा दादा ताजा ताजा चिकना चिकना म्हावरा माझा इस्वास ठेव रं सांगतंय् नक्की याचे पुरती कोंबकों री फिकी अंगानं जोर येईल कामकाजा दादा कामकाजा चिकना चिकना म्हावरा माझ' बालकराम वर्लिकर द्वारा गाए गए एक प्रसिद्ध कोली गीत में गंगा-जमुना नदियों, आम, जय, जुई जैसे पौधों और प्रतीकात्मक 'मोर' पक्षी का उल्लेख है, जिसके माध्यम से कवि मछुआरा समाज और उसके 'दहेज विरोधी' प्रगतिशील विचार की व्याख्या करता है। गंगा-जमुना दोघ्या बयनी गो पानी झुलझुल व्हाय दर्याकिनारी एक बंगला गो पानी जाय-जुई-जाय आंब्याच्या डांगलीवर बसलाय् मोर, नवरीचा बापुस कवटं चोर करवल्या खुइताना आंब्याच्या डांगल्या म्हायेरा जावालं सांजवलं आंब्याची डांगली हलविली नवर्याने नवरीला पलविली' पांडुरंग अगवाने की मधुर संगत वाला एक कोली गीत 'माझा कोंबडा' है जो बढ़ती

पक्षियों विविधता और बदलती प्रकृति को समझ पाएंगे। कौवा, मोर, मुर्गा और कोयल ऐसे पक्षी हैं जिनका उपयोग अक्सर कोलीगीत में प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है। इनमें से 'कोम्बडा याने मुर्गा' इसलिए खास है क्योंकि यह इस मछुआरा समुदाय की आराध्य देवी 'एकवीरा देवी' हैं जो लोनावाला के कार्ले गांव में एक पहाड़ी पर वह मुर्गे पर विराजमान हैं।'आई माझी कोणाला पावली गो आई माझी कोणाला पावली आई माझी कोंबर्यावर बैसली गो आई माझी कोंबर्यावर बैसली' शाहीर साबले द्वारा गाया गया यह कोलीगीत देवी एकवीरा और उनके वाहन कोम्बडा की महिमा करता है। एक नायक की मां के रूप में महंगाई और भारतीय संस्कृति को भूलकर पश्चिमी तरीकों को अपनाने वाले युवाओं का वर्णन करता है। 'माझा कोंबरा कोणी मारिला माझ्या कोबर्याची बांग आणि आजकाल सगळंच झालं महाग ' एक हालिया कोली गीत सुजीत पाटिल द्वारा लिखित 'कुहू कुहू कोयल दनाणली आई तुझ्या डोंगरावर' है जिसमें बदलते पर्यटन, मुंबई-पुणे राजमार्ग और पेड़ों का उल्लेख है, वहीं, शांताराम नंदगांवकर और अनंत पाटिल द्वारा रचित कोली गीत 'माझ्या दारावर मोरयो आयलो मोर मला बोलावतो' एक लड़की की अपनी मां और सुंदर प्रकृति के साथ एक सुंदर तस्वीर प्रस्तुत करता है।

हाशिये पर सुरक्षा के उपाय, दावानल के आगे बेबस हैं उत्तराखंड की वन पंचायतें

उत्तराखंड में हजारों वन पंचायतें सरकारी नियम से चलती हैं, पर वे दावानल नहीं बुझा पातीं, क्योंकि पारंपरिक व्यवस्था हाशिये पर चली गई है।वनों का पर्यावरण संरक्षण में अहम योगदान है। खेती-बाड़ी, पानी, हवा, मिट्टी हमारा जीवन है और इसके लिए जंगल जरूरी हैं। आदिकाल से ही लोगों ने वन बचाने के लिए वन पंचायतें बनाई हैं। गांव में खेती एवं वन सुरक्षा के लिए चौकीदारी व्यवस्था को महत्व दिया गया था। जंगल पर निर्भर लोगों ने वनों से घास और लकड़ी लेने के नियम भी बनाए थे। इसके संकेत आज भी पहाड़ी और आदिवासी गांवों में दिखाई देते हैं, जहां जंगल के रास्ते पर लकड़ी के तराजू बने हुए हैं।जब लोग जंगल से घास, लकड़ी लेकर आते थे, तो वन पंचायत द्वारा नियुक्त चौकीदार वजन करता था। सभी लोग चौकीदार को हर फसल पर अनाज देते थे। जून से सितंबर के बीच में लोग चरागाहों में पशुओं को नहीं भेजते थे, क्योंकि इन महीनों में नई-नई घास और पौध जंगल में उगती है। उसकी सुरक्षा के लिए लोग पशुओं को घर पर रखकर ही चारे की व्यवस्था करते थे। इस तरह मनुष्य ने आदिकाल से ही अपनी खेती-बाड़ी के महत्व के लिए जंगलों का प्रबंधन करना शुरू कर दिया था।वर्ष 1815 में अंग्रेजों के आने से पहले लोग अपनी आजीविका के लिए भी वनों का प्रबंधन करते थे। वर्ष 1850 में अंग्रेज फ्रेडरिक विल्सन ने गंगा घाटी के उद्गम में स्थित हर्षिल में रहकर तत्कालीन टिहरी नरेश सुदर्शन शाह से सिर्फ 400 रुपये में शंकुधारी वनों का पट्टा लिया था। फिर उसने यहां के वनों का अंधाधुंध दोहन किया। गंगा घाटी की तमाम प्रजाति के पेड़ों को काटकर वे नदी के बहाव के साथ हरिद्वार तक ले गए और वहां से रेलवे लाइन बिछाने के लिए कोलकाता तक पहुंचाया था। विल्सन ने जंगली जानवरों का भी शिकार किया।इसी दौरान वर्ष 1823 में गांव की सीमाओं का भी निर्धारण किया गया, जिसके जरिये वन भूमि पर लोगों के अधिकार को सीमित करने का प्रयास आरंभ हुआ था। अंग्रेजों ने इसके लिए वर्ष 1865 में पहला वन अधिनियम बनाया था। फिर वर्ष 1877 में वनों की सीमाओं को भी निर्धारित करने का काम हुआ। इस प्रक्रिया में खेती की जमीन को छोड़कर संपूर्ण भूमि सुरक्षित वन भूमि के रूप में बदली गई। अंग्रेजों के इस कानून के कारण ही वन भूमि पर लोगों को अतिक्रमणकारी मानने का सिद्धांत जारी हुआ। हालांकि अंग्रेजों की इस व्यवस्था के विरोध में लोग सड़कों पर उतरे थे। यह घटना 1915 -21 के बीच हुई है। इसके बाद अंग्रेज शासन ने एक 'शिकायत समिति' का गठन कर आरक्षित वनों को 'दर्जा एक' और 'दर्जा दो' में बांटा, जिसमें लोगों के अधिकारों को लौटाने की व्यवस्था की गई।फिर 1925 में 'शिकायत समिति' की संस्तुतियों के आधार पर मद्रास प्रेसीडेंसी स्थित कम्यूनिटी फॉरेस्ट की तर्ज पर उत्तराखंड में भी पंचायती वन व्यवस्था शुरू की गई। वर्ष 1931 में वन पंचायत नियमावली भी बनाई गई। वन पंचायत का गठन 1932 में प्रारंभ हुआ था।

फास्ट फूड नेशन' बनने की ओर मगर आहार शैली का यह बदलाव चिंता का सबब

नवीनतम उपभोक्ता सर्वे की रिपोर्ट का यह कहना काफी गंभीर है कि देश के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के आहार का पैटर्न बदल रहा है। आहार शैली में बदलाव को आर्थिक विकास का मुख्य संकेतक माना जाता है, लेकिन पैकेज्ड फूड के प्रति बढ़ते आकर्षण के खतरे ज्यादा हैं।चाहे सत्ता में किसी भी दल की सरकार हो और आप चाहे जहां भी देखें, विरोधाभास भारतीय वास्तविकता के केंद्र में है। इसलिए शायद आश्चर्य की बात नहीं कि प्राचीन भारत, प्राचीन सभ्यता के आदर्श और मूल्यों की व्यापक चर्चा के बीच भारतीय खानपान की संस्कृति अति-प्रसंस्कृत खाद्य की ओर बढ़ रही है, जिसे कथित तौर पर 'आधुनिक' आहार का मुख्य आधार कहा जाता है और जिसका, हमारी सेहत पर बुरा असर भी पड़ रहा है।हाल ही में जारी घरेलू उपभोग खर्च सर्वेक्षण (एचसीईएस) एक बार फिर उसी बात की पुष्टि कर रहा है, जिसके बारे में चिकित्सक और स्वास्थ्य पैरोकार लंबे समय से चेतावनी दे रहे थे। यह नवीनतम सर्वेक्षण अगस्त, 2022 से जुलाई, 2023 के बीच किया गया था। 11 वर्षों के अंतराल के बाद प्रकाशित नवीनतम सर्वेक्षण की तुलना पहले के सर्वेक्षणों से नहीं की जा सकती।नवीनतम एचसीईएस में कई नई चीजें हैं, लेकिन बदलाव का व्यापक रुझान स्पष्ट है। एक उभरता हुआ रुझान भारतीय खानपान से संबंधित है। सर्वेक्षण के निष्कर्ष दिखाते हैं कि कुल खाद्य उपभोग खर्च में अनाज और दालों की हिस्सेदारी ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों में तेजी से घट रही है। वर्ष 1999-2000 में ग्रामीण परिवारों में अनाज पर खर्च कुल उपभोग खर्च का 22.16 फीसदी था, जो कि अब घटकर 4.91 फीसदी रह गया है। शहरी परिवारों में अनाज पर खर्च इसी अवधि के दौरान 12 फीसदी से घटकर 3.64 फीसदी रह गया है। इसी तरह वर्ष 1999-2000 में ग्रामीण परिवारों में दालों पर खर्च कुल उपभोग खर्च का 3.81 फीसदी था, जो अब घटकर 1.77 फीसदी रह गया है और शहरी परिवारों में यह 2.84 फीसदी से घटकर 1.21 फीसदी रह गया है। ग्रामीण परिवारों में अनाज एवं दालों पर खर्च में गिरावट ज्यादा स्पष्ट दिखाई देता है। इसका एक प्रमुख कारण प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत मुफ्त और सब्सिडी वाले खाद्यान्नों (अनाज एवं दालें) का वितरण हो सकता है।नवीनतम घरेलू सर्वे से यह भी पता चलता है कि अब लोग दूध, अंडा, मछली एवं मांस, फल एवं सब्जियों के उपभोग पर ज्यादा खर्च करने लगे हैं। सर्वेक्षण के अनुसार, भारत के लोग सूखे मेवे (ड्राइ फ्रूट्स) का अधिक सेवन कर रहे हैं। लेकिन ये आंकड़े पूरी कहानी बयां नहीं करते हैं। अन्य चिंताजनक संकेतक भी हैं- 'पेय एवं प्रसंस्कृत खाद्य' पर खर्च का हिस्सा शहरी और ग्रामीण भारत में वर्ष 2011-12 के कुल मासिक प्रति व्यक्ति उपभोग खर्च (एमपीसीई) के 7.9 फीसदी से बढ़कर 9.4 फीसदी हो गया है। वर्ष 1999-2000 में यह आंकड़ा 4.19 फीसदी था। इसके साथ ही पिछले दशक की इसी अवधि में ग्रामीण भारत में पान, तंबाकू एवं अन्य नशीले पदार्थों पर खर्च 3.21 फीसदी से बढ़कर 3.70 फीसदी हो गया है। वर्ष 1999-2000 में यह आंकड़ा 2.87 फीसदी था। इन आंकड़ों से रुझान स्पष्ट हैं।भारतीय शहरों का आहार संबंधी आंकड़ा तो और भी चौंकाने वाला है। नवीनतम अनुमानों के अनुसार, शहरी भारत में कुल मासिक उपभोग खर्च का लगभग 11 फीसदी प्रसंस्कृत खाद्य पर खर्च होता है। यह तब हो रहा है, जब भारत जीवन-शैली से जुड़ी बीमारियों से संबंधित महामारी की ओर बढ़ रहा है, जो कुछ अंश तक खराब आहार के कारण होता है। नवीनतम घरेलू उपभोग खर्च सर्वेक्षण ग्रामीण एवं शहरी, दोनों क्षेत्रों में बढ़ते चिकित्सीय उपचार (अस्पतालों में भर्ती और गैर-भर्ती, दोनों इलाजों पर) खर्च को दर्शाता है। स्वास्थ्य पैरोकार चेतावनी दे रहे हैं कि खराब आहार हमारे स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़े खतरों में से एक है। वे बेहतर विनियमन की जरूरत बताते हैं, जिसमें व्यवहार परिवर्तन के साथ पैक लेबलिंग एवं उपभोक्ता जागरूकता शामिल हैं।नवीनतम उपभोक्ता सर्वे से यह भी पता चलता है कि अति-प्रसंस्कृत खाद्य का उपभोग देश के शहरी एवं ग्रामीण, दोनों इलाकों में बढ़ा है। आहार-शैली में बदलाव का भारत के तीव्र आर्थिक विकास से गहरा संबंध है। कई अध्ययनों में रेखांकित किया गया है कि अति-प्रसंस्कृत खाद्य जीवन के प्रारंभिक चरण में गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के लिए एक प्रमुख जोखिम कारक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने 2023 की अपनी रिपोर्ट में रेखांकित किया कि 'नमकीन स्नैक्स की उच्च वृद्धि दर चिंता का एक प्रमुख कारण है, क्योंकि ऐसे खाद्य पदार्थों की बढ़ती खपत से उपभोक्ताओं में उच्च रक्तचाप और अन्य एनसीडी के जोखिम बढ़ सकते हैं।'द ग्रोथ ऑफ अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड्स इन इंडियाः एन एनालिसिस ऑफ ट्रेंड्स, इश्यूज, ऐंड पॉलिसी रिकमेंडेशन शीर्षक डब्ल्यूएचओ रिपोर्ट में भी बताया गया है कि 'खुदरा बिक्री की मात्रा के मामले में तैयार और सुविधाजनक भोजन उपश्रेणी में सॉस/ड्रेसिंग/मसालों का वर्चस्व है, इसके बाद इंस्टेंट नूडल्स और रेडी-टू-ईट (आरटीई) खाना पकाने की सामग्री का स्थान है। ये उत्पाद अक्सर चीनी, नमक और संतृप्त वसा से भरपूर होते हैं, जिसके कारण इनका नियमित आधार पर उपभोग ठीक नहीं है। खुदरा बिक्री मूल्य के संदर्भ में इन श्रेणियों की 2021 में बाजार हिस्सेदारी 90 फीसदी थी, जो 2011 में 88 फीसदी थी।'इसके अलावा, उच्च शर्करा और उच्च ग्लाइसेमिक इंडेक्स (कार्बोहाइड्रेट वाले आहार की पाचन एवं एक निश्चित समयावधि में शुगर लेबल नापने का तरीका) वाले नाश्ते का अनाज भी चिंता के विषय हो सकते हैं, क्योंकि भारत में मधुमेह के रोगियों की संख्या बढ़ रही है। उच्च ग्लाइसेमिक इंडेक्स के परिणामस्वरूप रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) के स्तर में अचानक वृद्धि हो सकती है, जिससे मधुमेह रोगियों के लिए स्वास्थ्य खतरा पैदा हो सकता है। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि भारत में छोटे बच्चों और किशोरों में ब्लड शुगर का स्तर सामान्य से बहुत अधिक होने के मामलों में भी भारी वृद्धि हो रही है।एरिक श्लॉसर ने 2001 में प्रकाशित अपनी पुस्तक फास्ट फूड नेशनः द डार्क साइड ऑफ द ऑल-अमेरिकन मील में अमेरिका के फास्ट फूड उद्योग के स्याह पक्ष को दर्शाया है, कि कैसे इसने अमेरिका के परिदृश्य को बदल दिया, अमीर और गरीब के बीच की खाई को चौड़ा कर दिया, मोटापे की महामारी को बढ़ावा दिया और दुनिया भर में खाद्य उत्पादन में बदलाव लाया।

सूचकांकों के आईने में बिहार के विकास में अंतिम व्यक्ति, बदहाली को लेकर उठे स्वाभाविक सवाल

विभिन्न सूचकांकों में बिहार की बदहाल स्थिति राज्य की शासन व्यवस्था की वास्तविक कहानी बयां करती है।यदि कोई राज्य सरकार लगभग दो दशकों से सत्ता में है, तो एक अपरिहार्य प्रश्न उठता है कि उसने आर्थिक विकास, मानव विकास और शासन के मानकों में कैसा प्रदर्शन किया? 2011-12 से 2021-22 तक, बिहार का सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) 5.9 फीसदी की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ा, जो राष्ट्रीय औसत के काफी करीब है। लेकिन बिहार के जीएसडीपी का स्तर प्रमुख राज्यों में सबसे कम है, बावजूद इसके कि निचले आधार पर उच्च वृद्धि हासिल करना आसान होता है। शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद में 2011-12 में बिहार का सकल घरेलू उत्पाद गुजरात का 43, कर्नाटक का 41 और तमिलनाडु का 34 फीसदी था; 2021-22 में बिहार के सकल घरेलू उत्पाद का हिस्सा घटकर गुजरात का 35, कर्नाटक का 33 और तमिलनाडु का 32 फीसदी रह गया।बिहार की प्रति व्यक्ति आय भारत में सबसे कम है। 1960-61 में बिहार की प्रति व्यक्ति एनएसडीपी राष्ट्रीय औसत का 70 फीसदी थी; जो 2005 तक घटकर राष्ट्रीय का 33 फीसदी हो गई, जब जेडीयू सरकार सत्ता में आई। 2005 से आज तक नीतीश कुमार की ही सरकार रही। 2020-21 में, बिहार की प्रति व्यक्ति एनएसडीपी राष्ट्रीय औसत का 33 फीसदी थी। इस प्रकार, उनकी सत्ता में लगभग दो दशकों के बाद भी राष्ट्रीय औसत के सापेक्ष बिहार का अभिसरण के बजाय थोड़ा विचलन ही हुआ है।दूसरा मुद्दा बिहार के भीतर प्रति व्यक्ति उत्पाद में स्थानिक असमानता का है। 2020-21 में प्रति व्यक्ति सकल जिला घरेलू उत्पाद पटना में 1,15,239 रुपये, जबकि बेगूसराय और मुंगेर में क्रमशः 45,497 और 42,793 रुपये था, यानी पटना के आधे से भी कम। 2020-21 में बिहार का प्रति व्यक्ति घरेलू उत्पाद मात्र रुपये 31,522 था, जो पटना (1,15,239 रुपये) के एक-तिहाई से भी कम है। इसके अलावा, बिहार ने संरचनात्मक परिवर्तन के चिंताजनक उलटफेर का भी अनुभव किया है। 2017-18 और 2022-23 के बीच कृषि में कार्यबल 50 फीसदी बढ़कर 125 लाख से 190 लाख हो गया है; जबकि 2020 और 2023 के बीच कृषि में भारत के कार्यबल में छह करोड़ की वृद्धि हुई है, बिहार में यह वृद्धि बहुत अधिक है।नीति आयोग की ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग (2019) में बिहार 29 में से 26वें स्थान पर है। 2021 में बिहार को भारत के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का सिर्फ 0.29 फीसदी प्राप्त हुआ। बुनियादी मानव पूंजी की सक्षमता के बिना बिहार विदेशी निवेश आकर्षित करने में विफल रहा है। बिहार की 2025 तक राष्ट्रीय निर्यात में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाकर 10 फीसदी करना चाहता है, हालांकि, वर्तमान हिस्सेदारी सिर्फ 0.52 फीसदी है। यहां तक कि प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सामाजिक प्रगति सूचकांक 2022 के संदर्भ में भी बिहार में 'बहुत कम सामाजिक प्रगति' हुई है, और इसमें 36 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में वह 35वें स्थान पर है।स्वास्थ्य प्रदर्शन सूचकांक (2019-20) में बिहार 19 राज्यों में 18वें स्थान पर है। बिहार में नवजात मृत्युदर केरल की तुलना में पांच गुना और राष्ट्रीय औसत से 3.5 गुना अधिक है। इसका मुख्य कारण यह है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं में जरूरी कार्यबल के मुकाबले स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं की कमी के मामले में बिहार देश के राज्यों में शीर्ष पर है।इसी तरह, शिक्षा के मामले में, नीति आयोग के स्कूल शिक्षा गुणवत्ता सूचकांक 2019 में बिहार 20 बड़े राज्यों में 19वें स्थान पर है। फिर स्कूलों और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार कैसे हो सकता है? स्कूलों में 2.2 लाख शिक्षकों की कमी है, विश्वविद्यालयों में कर्मचारियों, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में डॉक्टरों और पैरा-मेडिक्स की कमी है।सुशासन सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण घटक होता है। सुशासन सूचकांक में बिहार का नीचे के कुछ राज्यों में आना 'सुशासन' की वास्तविक कहानी बताता है। कुल मिलाकर, जब तक हम आर्थिक या सामाजिक परिवर्तन के बिना आर्थिक विकास का पीछा करते हैं, हम गांधी जी की नसीहत से दूर चले जाते हैं कि 'विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए

रिटायरमेंट फंड का सही तरीके से करें उपयोग, एकमुश्त रकम का करें ऐसा इस्तेमाल, जो आपके काम आए

कभी भी किसी भी जरिये मिली एकमुश्त रकम का उपयोग ऐसी जगह पर करें, जो आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण हो। ऐसा न हो कि इसे बेकार समझ कर आप कहीं भी और किसी भी तरह से खर्च कर चुकाने को दें प्राथमिकता बैंक खाते में पैसा बेकार पड़ा रहना कोई अच्छा विकल्प नहीं है। अपने जीवनसाथी और परिवार के साथ बैठकर उन चीजों की सूची बना सकते हैं जो वे आपकी इस रकम से करना

चाहेंगे। आपको सूची को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके लिए एक समय सीमा तय करनी चाहिए। इस तरह आप उनकी इच्छाओं को जान पाएंगे। यदि आप पर कोई बकाया कर्ज है और वह आपको प्राप्त एकमुश्त धनराशि से कम है तो सबसे पहले उसे चुका दें। पैसा खर्च कहाँ और कैसे करें, इसके बारे में सोचने से बेहतर है कि ब्याज वाले कर्ज को खत्म कर दिया जाए। परिवार की मदद करें अपनी सेवानिवृत्ति निधि को आप इसे अपने बच्चों या भाई-बहनों को सौंपने की चाहत रख सकते हैं। अपने पास आए इस बड़े पैसे से अपने पोते-पोतियों की भविष्य की शिक्षा के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैंइस अवसर का उपयोग दान और उन कार्यों के लिए भी कर सकते हैं जो अपनी मानसिक शांति के लिए करना चाहते हैं। कर भुगतान के लिए तैयार रहें आप इस बड़ी राशि पर बनने वाले कर की जांच करें। धन को इस तरह से समाहित करने का प्रयास करें कि आपकी कर देनदारी कम से कम हो। अधिकांश सेवानिवृत्ति लाभ कर मुक्त होते हैं। लेकिन यदि आपको मुफ्त सीमा से अधिक धन प्राप्त हुआ है, तो कर का भुगतान करने के लिए तैयार रहें। यह प्रक्रिया वास्तव में उस राशि को कम कर देगी जो आपने वास्तव में प्राप्त की गई धनराशि पर पुनर्विचार करने के लिए प्राप्त की है। सेवानिवृत्ति का आनंद लें अगर आप भी विपुल गुप्ता जैसी स्थिति में हैं, तो आपको सेवानिवृत्ति का आनंद लेना चाहिए। एकमुश्त राशि प्राप्त करने से नहीं डरना चाहिए। अप्रत्याशित रूप से मिलने वाले पैसे को संभाल सकते हैं। सावधान रहें कि इसे बर्बाद न करें। अक्सर जब हमें अचानक बहुत सारा पैसा मिल जाता है । दें। ध्यान दें, पैसा जितनी मेहनत से आता है, उतने ही सही तरीके से उसे खर्च भी करना चाहिए।आगरा के प्रतिष्ठित केंद्रीय विश्वविद्यालय से जुड़े विपुल गुप्ता सेवानिवृत्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं। 35 साल पहले इतिहास विभाग में एक जूनियर रीसर्चर से करिअर की शुरुआत करने वाले गुप्ता अब एक वरिष्ठ प्रोफेसर के रूप में सेवानिवृत्त होंगे। उन्होंने अपने करिअर में छात्रों को शिक्षित किया है, लेकिन जब उनके खुद के वित्त को संभालने की बात आती है, तो वह हमेशा लड़खड़ा जाते हैं। उन्हें लगता है कि वह जिस पेंशन के हकदार हैं, वह सेवानिवृत्ति के बाद उनकी अच्छे से देखभाल कर लेगा। फिर भी वित्त को लेकर उनकी चिंता लाजिमी है। एकमुश्त रकम को संभालने की चिंता विपुल का ध्यान सिर्फ मासिक वेतन कमाने पर था। इसलिए उन्होंने कभी इतनी बड़ी रकम नहीं देखी, जो अब से एक महीने बाद में उन्हें मिलने वाली है। अब उन्हें चिंता सता रही है कि सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाली एकमुश्त रकम को कैसे संभालेंगे। कुछ लोग उन्हें सलाह भी दे रहे हैं कि इस बड़ी रकम का क्या करना चाहिए। बड़ी रकम को संभालना, खासकर जब आप इसके आदी नहीं होते हैं, तो यह मुश्किल काम होता है और यह भावनात्मक रूप से थका देने वाला हो सकता है। इसमें भावनात्मक पहलू इसलिए आता है क्योंकि जो व्यक्ति सेवानिवृत्त होने वाला है वह उसकी सालों की कड़ी मेहनत का फल होता है। जो लोग सेवानिवृत्ति के करीब हैं और जिन्हें बड़ी रकम मिलने वाली है, उन्हें मेरा सुझाव है कि वे हर तरह से तैयार रहें। यहां कई ऐसी चीजें हैं जो किसी को करनी चाहिए। कर्ज

संक्षिप्त समाचार

निक्की हेली ने ट्रंप को मात देकर रचा इतिहास

एएफपी, रॉयटर्स। अमेरिका में इस साल नवंबर में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होने वाले हैं। रिपब्लिकन पार्टी की ओर से निक्की हेली और डोनाल्ड ट्रंप के बीच मुकाबला हो रहा है। निक्की हेली ने डिस्ट्रिक्ट ऑफ कोलंबिया में हुए रिपब्लिकन प्राइमरी में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को शिकस्त दे दी है। निक्की को 62.9 फीसदी जबकि ट्रंप को 33.2 फीसदी वोट ही मिले। भले ही अभी तक प्राइमरी चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप ने निक्की हेली को एकतरफा शिकस्त दी है लेकिन निक्की हेली लगातार ट्रंप को चुनौती दे रही हैं।इसी बीच निक्की हेली ने डिस्ट्रिक्ट ऑफ कोलंबिया में हुए रिपब्लिकन प्राइमरी में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड

ट्रंप को शिकस्त दे दी है। निक्की को 62.9 फीसदी जबकि ट्रंप को 33.2 फीसदी वोट ही मिले। वो डोनाल्ड ट्रंप को राष्ट्रपति पद की रेस में मात देने के लिए कड़ी मेहनत कर रहीं हैं।किसी रिपब्लिकन प्राइमरी इलेक्शन में जीत दर्ज करने वाली निक्की हेली अमेरिकी इतिहास में पहली महिला बन गई है। हालांकि, राष्ट्रपति पद की रेस में ट्रंप की दावेदारी काफी मजबूत है।भले ही अभी तक प्राइमरी चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप ने निक्की हेली को एकतरफा शिकस्त दी है, लेकिन निक्की हेली लगातार ट्रंप को चुनौती दे रही हैं।निक्की हेली ने कुछ दिनों पहले कहा था, मौजूदा राष्ट्रपति जो बाइडन को डोनाल्ड ट्रंप हरा नहीं सकते हैं। ऐसे में मैं रेस से पीछे नहीं हटूंगी। मेरे इस दौड़ में रहने की वजह से लोगों के पास बेहतर ऑप्शन रहेगा। अमेरिका दोबारा डोनाल्ड ट्रंप या जो बाइडन को नहीं झेल सकता है।निर्दलीय नेता के तौर पर चुनाव लड़ने की बातों को निक्की हेली ने दरकिनार कर दिया है।

मां का आशीर्वाद है लेकिन भाजपा से टिकट मिलने के बाद सुषमा स्वराज की बेटी ने बयां की अपनी खुशी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी ने दिवंगत पूर्व केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज को अपना उम्मीदवार बनाया है। उम्मीदवार बनाए जाने पर बांसुरी

स्वराज ने खुशी जाहिर करते हुए अपनी प्रतिक्रिया साझा की।बांसुरी स्वराज ने अपनी मां सुषमा स्वराज को याद करते हुए कहा मां का आशीर्वाद है लेकिन ये टिकट मुझे नहीं मिले। ये टिकट एक-एक भाजपा के कार्यकर्ता को मिली है। पेशे से वकील बांसुरी स्वराज ने वारविक विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में बीए (ऑनर्स) के साथ स्नातक होने के बाद लंदन में बीपीपी लॉ स्कूल में कानून की पढ़ाई की।उन्होंने कहा,बहुत कृतज्ञ महसूस कर रही हूं। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह जी की। मैं हर भाजपा नेता को धन्यवाद देना चाहती हूं कि उन्होंने मुझे मौका दिया।उन्होंने आगे कहा,अबकी बार एक बार फिर मोदी सरकार के संकल्प के साथ भाजपा का कार्यकर्ता नई दिल्ली लोकसभा सीट पर जाएगा और मुझे यकीन है कि एक बार फिर पीएम मोदी को देश का प्रधानमंत्री बनाया जाएगा।बांसुरी स्वराज ने अपनी मां सुषमा स्वराज को याद करते हुए कहा, मां का आशीर्वाद है, लेकिन ये टिकट मुझे नहीं मिले। ये टिकट एक-एक भाजपा के कार्यकर्ता को मिली है।पेशे से वकील बांसुरी स्वराज ने वारविक विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में बीए (ऑनर्स) के साथ स्नातक होने के बाद लंदन में बीपीपी लॉ स्कूल में कानून की पढ़ाई की। उन्होंने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के सेंट कैथरीन कॉलेज से मास्टर ऑफ स्टडीज भी पूरी की। बांसुरी स्वराज ने 2007 में बार काउंसिल ऑफ दिल्ली में दाखिला लिया।

कर्ज से परेशान पिता ने कथित तौर पर अपने तीन बच्चों को उतारा मौत के घाट

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
रंगारेड्डी (तेलंगाना)। तेलंगाना के रंगारेड्डी जिले के तंगुतूर गांव में एक पिता ने कथित तौर पर अपने तीन बच्चों की हत्या करने के बाद खुद भी फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। न्यूज एजेंसी एएनआई के मुताबिक, 37 वर्षीय मृतक रवि पर कुछ वित्तीय कर्ज था और वह इस कारण से अवसादग्रस्त था। पुलिस का कहना है कि शवों को अस्पताल भेज दिया गया है और मामले की जांच की जा रही है।तेलंगाना के रंगारेड्डी जिले के

तंगुतूर गांव में एक पिता ने कथित तौर पर अपने तीन बच्चों की हत्या करने के बाद खुद भी फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। न्यूज एजेंसी एएनआई के मुताबिक 37 वर्षीय मृतक रवि पर कुछ वित्तीय कर्ज था और वह इस कारण से अवसादग्रस्त था। पुलिस का कहना है कि शवों को अस्पताल भेज दिया गया है और मामले की जांच की जा रही है।शुरुआती जांच में पता चला कि पिछले कुछ वर्षों में मृतक ने अपने पैतृक गांव और अन्य गांवों के लोगों से धन घोटाला किया था। बताया जा रहा है कि रवि ने एक व्यावसायिक योजना शुरू की थी और निवेश पर उच्च रिटर्न का आश्वासन देकर लोगों से धन एकत्र किया था।

सुप्रीम कोर्ट ने किसानों के समर्थन में दाखिल पीआईएल किया खारिज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एक याचिकाकर्ता को लगातार विरोध लेने को कहा है। साथ ही वकीलों को हिदायत देते हुए कहा कि यह एक बहुत ही जटिल मुद्दा है इसे

और प्रदर्शन कर रहे किसानों की मांगों पर विचार करने के लिए भारत सरकार को निर्देश देने की मांग वाली अपनी याचिका वापस लेने को कहा हैसुप्रीम कोर्ट ने एक याचिकाकर्ता को लगातार विरोध और प्रदर्शन कर रहे किसानों की मांगों पर विचार करने के लिए भारत सरकार को निर्देश देने की मांग वाली अपनी याचिका वापस लेकर पब्लिसिटी स्टंट करने की कोशिश न की जाए।साथ ही, सख्ती दिखाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने वकीलों को हिदायत देते हुए कहा कि वे केवल पब्लिसिटी स्टंट के लिए अखबारों के आधार पर इस तरह की याचिका दायर करने से बचें। यह एक बहुत ही जटिल मुद्दा है, इसे लेकर प्रचार करने की कोशिश न की जाए।

मैं हूं मोदी का परिवार .....परिवारवाद के खिलाफ पीएम ने दिया नया नारा

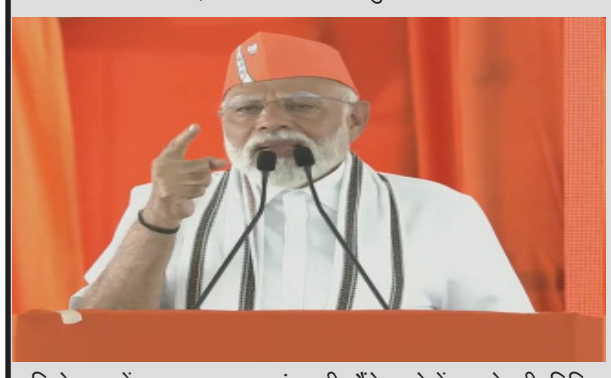

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
आदिलाबाद (तेलंगाना)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज तेलंगाना में 56,000 करोड़ रुपये से अधिक की कई विकास

परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। इसके बाद पीएम मोदी ने आदिलाबाद की जनता को संबोधित करते हुए कहा कि आज यह चुनावी सभा नहीं, बल्कि विकास- उत्सव है। इस दौरान उन्होंने विपक्ष के बिगड़े बोल पर भी पलटवार किया।पीएम मोदी ने आज तेलंगाना में कई विकास परियोजनाओं का शुभारंभ किया। इसके बाद पीएम मोदी ने आदिलाबाद में जनसभा को संबोधित करते हुए विपक्ष पर निशाना साधा। बीते रविवार को लालू प्रसाद के बोल पर पलटवार करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि गठबंधन के नेता और मंत्री बौखला गए हैं। उनका कहना है कि मेरा कोई परिवार नहीं है लेकिन सभी देशवासी और बहन-बेटियां मेरा परिवार हैंजनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा, ठजैसे ही मैंने करोड़ों रुपये की विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया, कुछ लोगों ने इसे 'चुनावी सभा' ??कहा है। मैं उन 'विश्लेषकों' को बताना चाहता हूं कि अभी चुनाव की घोषणा भी नहीं हुई है। यह 'चुनावी सभा' ??नहीं, बल्कि तेलंगाना में 'विकास उत्सव' है, जिसे मनाने के लिए मैं आया हूं।पीएम मोदी ने लालू प्रसाद यादव के बोल पर पलटवार करते हुए कहा निशाना साधा। उन्होंने कहा, ठभ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण में आकंठ डूबे गठबंधन के नेता बौखलाते जा रहे हैं। अब इन्होंने 2024 के चुनाव का अपना असली घोषणा पत्र निकाला है। मैं इनके परिवारवाद पर सवाल उठाता हूं, तो इन लोगों ने अब बोलना शुरू कर दिया है कि मोदी का कोई परिवार नहीं है। कल ये ऐसा भी कह सकते हैं कि तुम्हें कभी जेल की सजा नहीं हुई, इसलिए तुम राजनीति में भी नहीं आ सकते।पीएम मोदी ने विपक्ष पर पलटवार करते हुए कहा, 140 करोड़ देशवासी ही मेरा परिवार है। आज देश की करोड़ों बेटियां-माताएं-बहनें यही मोदी का परिवार है। देश का हर गरीब मेरा परिवार है। जिसका कोई नहीं है, वो भी मोदी के हैं और मोदी उनका है। मेरा भारत-मेरा परिवार, इन्हीं भावनाओं का विस्तार लेकर मैं सपनों को संकल्प के साथ सिद्ध करने के लिए, आपके लिए जी रहा हूं, आपके लिए जूझ रहा हूं और आपके लिए जूझता रहूंगा।पीएम मोदी ने कहा, हमने आदिवासी समाज के लिए काम किया है, जो कुछ लोगों को पसंद नहीं आ रहा है। हमने पीएम जन-जन योजना शुरू की और सभी वर्गों के लोगों के लिए समान अवसर तैयार किया है।तेलंगाना को हजारों करोड़ रुपये की सौगात देने के बाद पीएम मोदी ने कहा, तेलंगाना की धरती आज कई विकास परियोजनाओं की गवाह बन रही है।

विधानसभा के बाहर लगे थे आपत्तिजनक नारे', कर्नाटक भाजपा ने निजी रिपोर्ट के आधार पर किया दावा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
बेंगलुरु। कर्नाटक में कथित पाकिस्तान समर्थक नारे विवाद के बीच, भारतीय जनता पार्टी ने रविवार को एक निजी फोरेंसिक लैब रिपोर्ट विश्लेषण का हवाला देते हुए दावा किया है। दरअसल, इसमें कहा गया है कि इसकी अत्यधिक संभावना है कि विधान सौदा के बाहर आपत्तिजनक नारे लगाए गए थे।बीजेपी ने कहा कि जिस आदमी ने विधान सौदा में आपत्तिजनक नारे लगाने शुरू किए उसका नाम अब एफएसएल रिपोर्ट में प्रकाशित हुआ है। बीजेपी ने क्लू4 एविडेंस फॉरेंसिक इन्वेस्टिगेशन प्राइवेट लिमिटेड नाम की एक निजी प्रयोगशाला की रिपोर्ट का हवाला दिया है। मुख्यमंत्री सिद्दरमैया ने कहा कि आवाज के नमूने एफएसएल को भेजे गए हैं और दोषियों को सजा दी जाएगी।राज्यसभा चुनाव में पार्टी नेता नासिर हुसैन की जीत का जश्न

मनाते हुए विधानसभा के बाहर कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा आपत्तिजनक नारे लगाने का भाजपा की ओर से विरोध किया जा रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में बीजेपी कर्नाटक ने कहा कि रिपोर्ट से पता चला है कि कांग्रेस सच्चाई के बारे में झूठ फैलाकर झूठी खबरें रचने वाली है।बीजेपी ने कहा, ठजिस आदमी ने विधान सौदा में आपत्तिजनक नारे लगाने शुरू किए, उसका नाम अब एफएसएल रिपोर्ट में प्रकाशित हुआ है। कर्नाटक कांग्रेस और फर्जी समाचार फैक्ट्री की प्रमुख प्रियांक खरगे को अब अपने देशद्रोही कृत्य को स्वीकार करना चाहिए और विधान सभा के सामने साष्टांग प्रणाम करना चाहिए और लोगों से माफी मांगनी चाहिए।समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक, बीजेपी ने क्लू4 एविडेंस फॉरेंसिक इंवेस्टिगेशन प्राइवेट लिमिटेड नाम की एक निजी प्रयोगशाला की रिपोर्ट का हवाला दिया है।

पुराने आधार कार्ड को जल्द करा लें अपडेट, नहीं तो होगी परेशानी

बिजनेस डेस्क, नई दिल्ली। आधार कार्ड अब हमारी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गया है। बैंकिंग, एजुकेशन से लेकर सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने तक के लिए इसकी जरूरी पड़ती है। ऐसे में अगर आधार कार्ड में नाम या पते में कोई गलती है, तो समस्या हो जाती है। यह गलती खासकर पुराने आधार कार्ड में देखने को मिलती है।आधार कार्ड की बैंकिग

एजुकेशन से लेकर सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने तक के लिए जरूरत पड़ती है। अगर आपके आधार में किसी तरह की गलती है जैसे कि नाम पता या फिर जन्मतिथि तो आपके लिए समस्या हो सकती है। आधार कार्ड जारी करने वाली सरकारी संस्था अभी पुराने आधार को फ्री में अपडेट करने की सुविधा दे रही है। आइए जानते हैं इसका पूरा प्रोसेस।इसे देखते हुए आधार कार्ड जारी करने वाली सरकारी संस्था यूनीक आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने आधार में ऑनलाइन अपडेशन को अभी फ्री कर रखा है। आइए जानते हैं कि यह निशुल्क सुविधा किन लोगों के लिए है, यह कब तक उपलब्ध रहेगी और ऑनलाइन आधार कैसे अपडेट किया जा सकता है।सरकारी नियमों के मुताबिक, 10 साल पुराने आधार कार्ड की जानकारी को अपडेट करना जरूरी हैं है।

'आपको अंदाजा भी नहीं आपके बयान से सनातन धर्म पर विवादित बयान देने वाले उदयनिधि स्टालिन को सुप्रीम कोर्ट ने लगाई फटकार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने आज (4 फरवरी) सनातन धर्म को लेकर विवादित बयान देने वाले डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिन को जबरदस्त फटकार लगाई है।तमिलनाडु मुख्यमंत्री स्टालिन के

बेटे उदयनिधि स्टालिन ने सुप्रीम कोर्ट से गुहार लगाई थी कि महाराष्ट्र जम्मू-कश्मीर बिहार उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर को एक साथ जोड़ दिया जाए। न्यायमूर्ति दत्ता ने उदयनिधि स्टालिन के वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी से कहा कि आप अपने अनुच्छेद 19(1)(ए) का दुरुपयोग कर रहे हैं। पिछले साल सितंबर महीने में डीएमके नेता ने सनातन धर्म के खिलाफ टिप्पणी की।न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ उदयनिधि स्टालिन द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रही थी। तमिलनाडु मुख्यमंत्री स्टालिन के बेटे ने कोर्ट से गुहार लगाई थी कि महाराष्ट्र, जम्मू-कश्मीर, बिहार, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर को एक साथ जोड़ दिया जाए।न्यायमूर्ति दत्ता ने उदयनिधि स्टालिन के वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी से कहा,ठआप अपने अनुच्छेद 19(1)(ए) का दुरुपयोग कर रहे हैं। आप अपने अनुच्छेद 25 के अधिकार का दुरुपयोग कर रहे हैं। अब आप अपने अनुच्छेद 32 का अधिकार का प्रयोग कर रहे हैं? क्या आप नहीं जानते कि आपने जो कहा उसका क्या परिणाम क्या हो सकता है?न्यायमूर्ति की इस पर बात पर अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि वह उदयनिधि स्टालिन की टिप्पणियों को बिल्कुल भी सही नहीं ठहरा रहे हैं। उन्होंने कहा कि डीएमके नेता छह राज्यों में एफआईआर का सामने कर रहे हैं। इसका मतलब यह है मुझे छह हाई कोर्ट में जाना होगा। मैं लगातार इसमें बंधा रहूंगा।न्यायमूर्ति दत्ता ने फिर याचिकाकर्ता की टिप्पणियों पर कहा, आप आम आदमी नहीं हैं। आप एक मंत्री हैं। आपको ऐसे बयानों का परिणाम पता होना चाहिए।

इंडी गठबंधन ही खोल सकता नौकरियों के बंद दरवाजे राहुल गांधी ने भाजपा सरकार पर कसा तंज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी

ने सोमवार को भाजपा सरकार पर जमकर हमला बोला। राहुल ने खाली पदों को नहीं भरने को लेकर सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि युवाओं के लिए नौकरियों के बंद दरवाजे खोलना ही इंडी गठबंधन का संकल्प है। राहुल गांधी ने आज सरकारी नौकरियों में खाली पदों को नहीं भरने को लेकर भाजपा सरकार पर निशाना साधा है। राहुल ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार स्थायी नौकरी देने को बोझ समझती है और ठेका प्रथा को बढ़ावा दे रही है और कहा कि युवाओं के लिए नौकरियों के बंद दरवाजे खोलना ही इंडी गठबंधन का संकल्प है।राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि पीएम मोदी की मंशा रोजगार देने की नहीं है। एक्स पर हिंदी में एक पोस्ट में राहुल ने कहा, ठदेश के युवा, एक बात नोट कर लें। नरेंद्र मोदी का इरादा रोजगार देना नहीं है। नए पद बनाना तो दूर, वह केंद्र सरकार के खाली पदों को भी नहीं भर रहे।ठराहुल ने कहा कि संसद में केंद्र सरकार द्वारा पेश किए गए आंकड़ों पर गौर करें तो 78 विभागों में 9,64,000 पद खाली हैं। अगर अहम विभागों पर ही नजर डालें तो रेलवे में 2.93 लाख, गृह मंत्रालय में 1.43 लाख और गृह मंत्रालय में 2.64 लाख पद खाली हैं। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने पूछा कि क्या केंद्र सरकार के पास इसका जवाब है कि 15 प्रमुख विभागों में 30 फीसदी से ज्यादा पद खाली क्यों हैं?राहुल ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार स्थायी नौकरी देने को बोझ समझती है और ठेका प्रथा को बढ़ावा दे रही है, जहां न तो सुरक्षा है और न ही सम्मान। कांग्रेस नेता ने कहा कि खाली पद देश के युवाओं का अधिकार हैं और हमने उन्हें भरने के लिए एक ठोस योजना तैयार की है। उन्होंने कहा कि इंडी गठबंधन का संकल्प है कि हम युवाओं के लिए नौकरियों के बंद दरवाजे खोलेंगे।उन्होंने कहा कि बेरोजगारी का अंधकार दूर कर युवाओं की किस्मत का सूर्योदय होगा।

वहां पलटी के उस्ताद हैं', इशारों-इशारों में जब कांग्रेस ने नीतीश कुमार पर कसा तंज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
गुणा। राहुल गांधी की अगुवाई में भारत जोड़ो न्याय यात्रा मध्य प्रदेश पहुंच चुकी है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने रविवार को पटना में आयोजित हुए जन विश्वास रैली का गुणा में जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इस रैली का केवल एक ही संदेश था कि आई.एन.डी.आई.ए. गठबंधन किसानों, युवाओं के लिए न्याय के लिए है। यह एक महत्वपूर्ण रैली थी।कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने जन विश्वास रैली का जिक्र करते हुए कहा कि विपक्षी गठबंधन का मतलब है कि का मतलब है महंगाई बेरोजगारी सामाजिक धुर्वीकरण से मुक्ति। पटना राजनीति का केंद्र है न। सारे राजनीतिक भूकंप पटना से शुरू होते हैं। वहां पलटी के उस्ताद हैं। पटना के गांधी मैदान में रविवार को आई.एन.डी.आई.ए.

गठबंधन के नेताओं का जमावड़ा लगा था।उन्होंने आगे कहा, इस रैली का एक ही संदेश है कि आई.एन.डी.आई.ए. गठबंधन का मतलब है महंगाई, बेरोजगारी, सामाजिक धुर्वीकरण से मुक्ति। पटना राजनीति का केंद्र है न। सारे राजनीतिक भूकंप पटना से शुरू होते हैं। वहां पलटी के उस्ताद हैं।पटना के गांधी मैदान में रविवार को आई.एन.डी.आई.ए. गठबंधन के नेताओं का जमावड़ा लगा था। विपक्षी नेताओं ने राष्ट्रीय जनता दल के जन विश्वास रैली को संबोधित करते हुए मोदी सरकार पर निशाना साधा। इस रैली में कांग्रेस नेता राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता सीताराम येचुरी और राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रसाद जैसे दिग्गज नेताओं ने शिरकत की।जन विश्वास रैली को संबोधित करते हुए राजद सुप्रिमो लालू प्रसाद यादव ने मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, कौन है ये मोदी। है क्या चीज। उन्होंने दावा किया कि इसे (मोदी सरकार को) 2024 में उखाड़ फेकेंगे। उन्होंने गांधी मैदान में आयोजित जन विश्वास रैली के मंच से लोगों का आह्वान किया कि दिल्ली पर कब्जा करना है तैयार हो जाइये।राहुल गांधी ने कहा कि नरेन्द्र मोदी मात्र दो-तीन पूंजीपतियों के लिए काम करते हैं।

अब लालू ने कर दी राहुल गांधी जैसी गलती, पीएम के नारे के बाद भाजपा नेताओं का नया परिचय-'मैं हूं मोदी का परिवार...'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव से पहले परिवारवाद को लेकर एक नई राजनीतिक बहस शुरू हो

चुकी है। पटना के गांधी मैदान में राष्ट्रीय जनता दल ने शनिवार को जन विश्वास रैली का आयोजन किया था।भाजपा नेताओं ने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर अपना बायो चेंज करते हुए मोदी का परिवार लिख दिया है। अमित शाह पीयूष गोयल नितिन गडकरी समेत कई भाजपा नेताओं पर अपना बायो बदल लिया है। बता दें कि शनिवार को लालू यादव ने पीएम मोदी पर परिवार को लेकर व्यक्तिगत टिप्पणी की थी। आज पीएम मोदी ने कहा की पूरा देश उनका परिवार है।इस रैली में आई.एन.डी.आई.ए. गठबंधन के कई घटक दलों के नेताओं ने भी शिरकत की। बिहार की जनता को संबोधित करते हुए लालू यादव ने नरेंद्र मोदी पर व्यक्तिगत टिप्पणी की है।लालू यादव ने पीएम मोदी पर निशाना साधते हुए कहा था,नरेंद्र मोदी आजकल परिवारवाद का जिक्र कर रहे हैं। आपके पास परिवार नहीं है। आप हिंदू भी नहीं हैं।'लालू यादव के इस बयान पर पीएम मोदी ने आज पलटवार किया। तेलंगाना के अदिलाबाद में जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा,ठमेरे परिवार को लेकर मेरे ऊपर निशाना साधा गया। लेकिन, अब पूरा देश बोल रहा है कि मैं हू मोदी का परिवार। उन्होंने आगे कहा कि परिवारवादी पार्टी के चेहरे अलग हो सकते हैं लेकिन चरित्र एक ही होता है। दो पक्की चीजें हैं इनके चरित्र में एक झूठ और दूसरा लूट।पीएम मोदी के इस बयान के बाद भाजपा नेताओं ने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर अपना बायो चेंज करते हुए 'मोदी का परिवार' लिख दिया है। अमित शाह, पीयूष गोयल, नितिन गडकरी समेत कई भाजपा नेताओं पर अपना बायो बदल लिया है।दरअसल, लालू यादव ने बयान देकर कुछ ऐसी ही गलती कर दी, जो गलती राहुल गांधी ने साल 2019 में लोकसभा चुनाव के पहले किया था। साल 2019 में चुनाव रैली के दौरान कांग्रेस नेता ने 'चौकीदार चोर है का नारा दिया था', जिसके बाद बीजेपी नेताओं ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए 'मैं भी चौकूदार' कैंपेन शुरू किया था। उन्होंने आगे कहा, भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण में आकंठ डूबे घ्अ्घ् गठबंधन के नेता बौखलाते जा रहे हैं। अब इन्होंने 2024 के चुनाव का अपना असली घोषणा पत्र निकाला है। मैं इनके परिवारवाद पर सवाल उठाता हूं, तो इन लोगों ने अब बोलना शुरू कर दिया है कि मोदी का कोई परिवार नहीं है। कल ये ऐसा भी कह सकते हैं कि तुम्हें कभी जेल की सजा नहीं हुई, इसलिए तुम राजनीति में भी नहीं आ सकते।पटना में रैली को संबोधित करते हुए लालू यादव ने कहा था,कौन है ये मोदी। है क्या चीज। उन्होंने दावा किया कि इसे (मोदी सरकार को) 2024 में उखाड़ फेकेंगे। उन्होंने गांधी मैदान में आयोजित जन विश्वास रैली के मंच से लोगों का आह्वान किया कि दिल्ली पर कब्जा करना है तैयार हो जाइये।

प्रयागराज में दी जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन संस्था के द्वारा प्रयागराज में विभिन्न विधाओं में सक्रियता से कार्य कर रही मातृ शक्तियों को सम्मानित किया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रही डॉक्टर नम्रता जयसवाल और विशिष्ट अतिथि रही आबकारी इंस्पेक्टर प्रियंका मिश्रा जी इस कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलित और गणेश वंदना द्वारा की गई गणेश वंदना उपाध्यक्ष शालिनी दीक्षित द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसके बाद प्रदेश सचिव श्वेता साहू और जिला अध्यक्ष स्नेह लता सिंह द्वारा अतिथियों का अंग वस्त्र देकर सम्मान किया गया। चिकित्सा के क्षेत्र में डॉक्टर नम्रता जायसवाल (दंत चिकित्सक) प्रशासनिक सेवा के क्षेत्र में श्रीमती प्रियंका मिश्रा (आबकारी इंस्पेक्टर आबकारी विभाग) शिक्षा के क्षेत्र में श्रीमती अनुरागिनी सिंह (जिला अध्यक्ष उत्तर प्रदेश महिला शिक्षक संघ) रुचि राय प्रधानाचार्य (दिव्यभा इंटर कॉलेज प्रयागराज) सामाजिक सेवा के क्षेत्र में पूनम सिंह सेक्रेटरी (भाविनी डे केयर) नीता भारद्वाज मैनेजिंग डायरेक्टर (सोल्जर डिफेंस एकेडमी)श्रीमती अनीता सोनकर (आर पी नगर क्षेत्र) श्रीमती शिवानी गोस्वामी निदेशक (राहत संस्था) संगीत शिक्षा के क्षेत्र में डॉक्टर आकांक्षा पाल (प्रवक्ता सीएमपी डिग्री कॉलेज)अवध भाषा के प्रचार प्रसार एवं कंपेयर के रूप में पत्रकारिता के क्षेत्र में श्वेता श्रीवास्तव (प्रसार भारती)उधम के क्षेत्र में कुमारी शिव त्रिपाठी ,विधि एवं खेल के क्षेत्र में अनुराधा सुंदरम(अधिवक्ता उच्च न्यायालय तथा राज्य स्तरीय बैडमिंटन प्लेयर) पत्रकारिता के क्षेत्र में श्रीमती कल्पना शर्मा (जिला मीडिया प्रभारी) थे जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा संस्था के सभी सम्मानित सदस्यों का भी सम्मान किया गया जिसमें मुख्य रूप से श्वेता साहू स्नेह लता सिंह शालिनी दीक्षित मनीषा सिंह भवना जयसवाल, माहीं , रूषदा फातिमा विश्वजीत सिंह ,शिशिर गुप्ता शकील खान जी रहे। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय संस्कृत सचिव प्रियांशु श्रीवास्तव जी द्वारा , कार्यक्रम के अध्यक्षता प्रदेश सचिव श्वेता साहू जी द्वारा किया गया और कार्यक्रम का समापन डॉक्टर पुनीत अरोड़ा जी द्वारा किया गया।

मातृ शक्तियों को सम्मान

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा. दीपक अरोरा द्वारा श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि. 1-मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं आधुनिक समाचार पब्लिसिंग हाउस सी 41 यूपीएसआईडीसी नैनी प्रयागराज 211010 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक/प्रकाशक
डा. पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।